राजस्थान

कॉमन एलिजिबिलिटी टेस्ट (CET)

HANDWRITTEN NOTES

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

राजस्थान CET

(RSMSSB)

(COMMON ELIGIBILTY TEST)

(12th LEVEL)

[भाग -1] राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति + अर्थव्यवस्था

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान CET

(12th level)

भाग - 1

राजस्थान का इतिहास + कला एवं संस्कृति + अर्थव्यवस्था

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान CET (Senior Secondary Level)** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर (RSMSSB)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान CET (Senior Secondary Level)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें **/***

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302017 (RAJASTHAN)

मो : 01414045784, 8233195718

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp करें - https://wa.link/gwli3t

Online Order करें - https://bit.ly/rsmssb-cet-notes

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम (2022)

राजस्थान का इतिहास

1. प्राचीन सभ्यताएं 1

- कालीबंगा
- आहड़
- गणेश्वर
- बालाथल और बैराठ

2. राजस्थान के इतिहास की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ 10

- प्रमुख राजवंश
  - गुर्जर प्रतिहार वंश
  - मेवाड़ का इतिहास
  - चौहान वंश का इतिहास
  - राजस्थान के परमार वंश
  - जाट वंश
  - राठौड़ वंश एवं मारवाड़ वंश
  - कछवाहा राजवंश
  - बीकानेर के वंशज
  - किशनगढ़ का राठौड़ वंश
- प्रमुख राजवंशों की प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था
- सामाजिक-सांस्कृतिक आयाम।

3. राजस्थान में स्वतन्त्रता आन्दोलन 86

4. राजनीतिक जनजागरण 104

5. प्रजामण्डल आन्दोलन 111

6. राजस्थान का एकीकरण 127

कला एवं संस्कृति

1. स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषताएं 133

- किले एवं स्मारक
- कलाएँ
- चित्रकलाएँ और हस्तशिल्प

2. लोक भाषाएँ (बोलियाँ) एवं साहित्य 200

3. शास्त्रीय संगीत एवं शास्त्रीय नृत्य, लोक संगीत एवं वाद्य,

लोक नृत्य एवं नाट्य 216

4. धार्मिक जीवन (धार्मिक समुदाय) 260

- संत
- कवि
- योद्धा
- लोक देवता एवं लोक देवियाँ

5.मेले एवं त्यौहार, रीति – रिवाज, वेशभूषा तथा आभूषण 286

राजस्थान की अर्थव्यवस्था

1. राजस्थान की खाद्य व व्यावसायिक फसलें, कृषि आधारित उद्योग 311

2. अर्थव्यवस्था का वृहत् परिदृश्य 317

3. वृहत् सिंचाई एवं नदी घाटी परियोजनाएँ 329

4. राजस्थान में औद्योगिक विकास 329

5. गरीबी एवं बेरोजगारी 347

6. विभिन्न कल्याणकारी योजनाएँ 355

राजस्थान का इतिहास

अध्याय – I

प्राचीन सभ्यताएं

कांस्ययुगीन सभ्यताएं –

I. कालीबंगा की सभ्यता –

कालीबंगा की सभ्यता एक नदी के किनारे बसी हुई थी। नदी का नाम है – **सरस्वती नदी** । इसे **द्वेषनदी, मृतनदी, नटनदी** के नाम से भी जानते हैं। यह सभ्यता हनुमानगढ़ जिले में विकसित हुई थी हनुमानगढ़ जिले में एक अन्य सभ्यता जिसे **पीलीबंगा** की सभ्यता कहते हैं विकसित हुई।

इस सभ्यता की खोज –

- इस सभ्यता की सबसे पहले जानकारी देने वाले एक पुरातत्ववेत्ता एवं भाषा शास्त्री एल.पी. टेस्सिटोरी थे। इन्होंने ही इस सभ्यता के बारे में सबसे पहले परिचय दिया लेकिन इस सभ्यता की तरफ किसी का पूर्णरूप से ध्यान नहीं था इसलिए इसकी खोज नहीं हो पाई।
- इस सभ्यता के खोजकर्ता **अमलानंद घोष** हैं। इन्होंने 1952 में सबसे पहले इस सभ्यता की खोज की थी।
- इनके बाद में इस सभ्यता की खोज दो अन्य व्यक्तियों के द्वारा भी की गई थी जो 1960 से 1969 तक चली थी।

1. **बृजवासीलाल (बी.बी. लाल)**
2. **बीके (बालकृष्ण) थापर**

इन्हीं दोनों ने इस सभ्यता की विस्तृत रूप से खोज की थी

एल.पी. टेस्सिटोरी के बारे में –

- ये इटली के के निवासी थे। इनका जन्म सन् 1887 में हुआ। और यह अप्रैल 1914 ईस्वी में भारत मुंबई आए। जुलाई 1914 में यह जयपुर (राजस्थान) आये। बीकानेर राज्य इनकी कर्म स्थली रहा है।
- उस समय के तत्कालीन राजा महाराजागंगा सिंह जी ने इन्हें अपने राज्य के सभी प्रकार के चारण साहित्य लिखने की जिम्मेदारी दी।
- बीकानेर संग्रहालय भी इन्होंने ही बनवाया है ये एक भाषा शास्त्री एवं पुरातत्ववेत्ता थे उन्होंने राजस्थानी भाषा के दो प्रकार बताए थे।

1. पूर्वी राजस्थानी 2. पश्चिमी राजस्थानी

- इस सभ्यता का कालक्रम **कार्बन डेटिंग पद्धति** के अनुसार 2350 ईसा पूर्व से 1750 ईसा पूर्व माना जाता है।
- कालीबंगा शब्द "सिंधीभाषा" का एक शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है – **"काले रंग की चूड़िया"**। इस स्थल से काले रंग की चूड़ियों के बहुत सारी ढेर प्राप्त हुए इसलिए इस सभ्यता को कालीबंगा सभ्यता नाम दिया गया।
- कालीबंगा की सभ्यता भारत की ऐसी पहली सभ्यता स्थल है जो **स्वतंत्रता के बाद खोजी** गई थी। यह एक **कांस्य युगीन सभ्यता** है।
- हनुमानगढ़ जिले से इस सभ्यता से संबंधित जो भी वस्तुएं प्राप्त हुई हैं उनको सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान सरकार के द्वारा **1985-86 में कालीबंगा संग्रहालय** की स्थापना की गई थी। यह संग्रहालय **हनुमानगढ़** जिले में स्थित है।

इस सभ्यता की विशेषताएँ –

- इस सभ्यता की सड़कें एक दूसरे को **समकोण** पर काटती थी। इसलिए यहाँ पर मकान बनाने की पद्धति को **"ऑक्सफोर्ड पद्धति"** कहते हैं। इसी पद्धति को '**जाल पद्धति, ग्रीक, चेम्सफोर्ड पद्धति**' के नाम से भी जानते हैं।
- मकान कच्ची एवं पक्की ईंट के बने हुए थे, आरम्भ में यें कच्ची ईंटें थीं इसलिए इस सभ्यता को दीन हीन सभ्यता भी कहते हैं। इन ईंटों का आकार 30×15×7.5 है।
- इन मकानों की खिड़की एवं दरवाजे पीछे की ओर होते थे।
- यहाँ पर जो नालियां बनी हुई थी वह लकड़ी (काष्ठ) की बनी होती थी। आगे चलकर इन्हीं नालियों का निर्माण पक्की ईंटों से होता था। (विश्व में एकमात्र ऐसा स्थान जहां लकड़ियों की बनी नालियाँ मिली है वह कालीबंगा स्थल है)

(परीक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण)

- विश्व की प्राचीनतम **जुते हुए खेत** के प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं।
- यहाँ पर मिले हुए मकानों के अंदर की दीवारों में दरारें मिलती हैं इसलिए माना जाता है कि विश्व में प्राचीनतम भूकंप के प्रमाण यहीं से प्राप्त होते हैं।
- यहाँ के लोग एक साथ में **दो फसलें** करते थे अर्थात् फसलों के होने के प्रमाण भी यहीं से मिलते हैं **जौ और गेहूं।**
- यहाँ पर उत्खनन के दौरान **यज्ञकुंड / अग्नि वेदिकाएं** प्राप्त हुए हैं यहाँ के लोग **बलिप्रथा** में भी विश्वास रखते थे।
- इस सभ्यता का पालतू जीव **कुत्ता** था। इस सभ्यता के लोग **ऊँट** से भी परिचित थे इसके अलावा **गाय, भैंस, बकरी, घोड़ा से** भी परिचित थे ।
- विश्व में प्राचीनतम् नगर के प्रमाण यहीं पर मिले हैं इसलिए इसे **नगरीय सभ्यता** भी कहते हैं यहाँ पर मूर्तिपूजा, देवी / देवता के पूजन, चित्रांकन या मूर्ति का कोई प्रमाण नहीं मिला है।
- यहाँ पर समाधि प्रथा का प्रचलन था । यहाँ पर **समाधि तीन प्रकार** की मिलती है अर्थात् तीन प्रकार से मृतक का अंतिम संस्कार किया जाता था
- अंडाकार गड्ढा खोदकर व्यक्ति को दफनाना । इस गड्ढे में व्यक्ति का सिर उत्तर की ओर पैर दक्षिण की ओर होते थे ।
- अंडाकार गड्ढा खोदकर व्यक्ति को तोड़ मरोड़ कर इकट्ठा करके दफनाना ।
- एक गड्ढा खोदकर व्यक्ति के साथ आभूषण को दफनाना ।
- **स्वास्तिक चिह्न** का प्रमाण इसी कालीबंगा सभ्यता से प्राप्त होता है इस स्वास्तिक चिह्न का प्रयोग यहाँ के लोग वास्तुदोष को दूर करने के लिए करते थे ।
- कालीबंगा की सभ्यता और मेसोपोटामिया की सभ्यता की **समानता** के प्रमाण **बेलनाकार बर्तन** में मिलते हैं।
- यहाँ पर एक **कपाल** मिला है **जिसमें छः प्रकार के छेद** थे। जिससे अनुमान लगाया जाता है कि यहाँ के लोग **शल्य चिकित्सा** से परिचित थे अर्थात् शल्य चिकित्सा के प्राचीनतम प्रमाण इसी सभ्यता से मिले हैं ।
- यहाँ पर एक सिक्का प्राप्त हुआ है जिसके एक ओर स्त्री का चित्र है तथा दूसरी ओर **चीता** का चित्र बना हुआ है अर्थात् अनुमान लगाया जा सकता है कि यहाँ पर परिवार की **मातृसत्तात्मक प्रणाली** का प्रचलन था।
- कालीबंगा सभ्यता को सिंधु सभ्यता की **तीसरी राजधानी** कहा जाता है।
- कालीबंगा सभ्यता में पुरोहित का प्रमुख स्थान होता था।
- इस सभ्यता के लोग मध्य एशिया से व्यापार करते थे, इसका प्रमाण **सामूहिक तंदूर** से मिलता है क्योंकि तंदूर मध्य-एशिया से संबंधित है।
- इस सभ्यता के भवनों का **फर्श सजावट** एवं अलंकृत के रूप में मिलता है।

कालीबंगावासियों का सामाजिक जीवन

- उत्खनन से अनुमान लगाया जाता है कि कालीबंगा के समाज में धर्मगुरु (पुरोहित), चिकित्सक, कृषक, कुंभकार, बढ़ई, सुनार, दस्तकार, जुलाहे, ईंट एवं मनके निर्माता, मुद्रा (मोहरें) निर्माता, व्यापारी आदि धन्धों के लोग निवास करते थे।
- कालीबंगा वासियों के नागरिक जीवन में त्यौहार एवं धार्मिक उत्सवों का पर्याप्त महत्त्व था। इसके साथ ही खिलौने, पासे, मत्स्य काँटे आदि के अवशेषों से अनुमान है कि इनके जीवन में मनोरंजन का पर्याप्त महत्व था। संभवतः ये **शाकाहारी एवं मांसाहारी** दोनों होते थे। खाद्य सामग्रियों में फल, फूल, दूध, दही, जौ, गेहूँ, मांस आदि का प्रयोग होता था।

मृतक संस्कार :

कालीबंगा के निवासियों की **तीन प्रकार** की **समाधियाँ (कब्रें)** मिली हैं ।

- शवों को अण्डाकार गड्ढे में उत्तर की ओर सिर रखकर मृत्यु संबंधी उपकरणों के साथ गाड़ते थे।
- दूसरे प्रकार की समाधियों में **शव की टाँगे समेटकर** गाड़ा जाता था।
- तीसरे प्रकार में शव के साथ बर्तन और एक-एक सोने व मणि के दाने की माला से विभूषित कर गाड़ा जाता था।

- उत्खनन में जो शवाधान प्राप्त हुए हैं उनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि वे मृत्युपरांत किसी न किसी प्रकार का विश्वास अवश्य रखते थे, क्योंकि मृतकों के साथ खाद्य सामग्री, आभूषण, मनके, दर्पण तथा विभिन्न प्रकार के मदभाण्ड आदि रखे जाते थे।
- यहाँ मोहनजोदड़ो की भाँति लिंग, मातृशक्ति आदि की **मूर्तियाँ** नहीं मिली है, जिससे यहाँ के निवासियों की धार्मिक भावना का पता नहीं चल पाया है। यहाँ की **लिपि दाँये से बाँये** लिखी प्रतीत होती है साथ ही अक्षर एक-दूसरे के ऊपर खुदे हुए प्रतीत होते हैं।

आर्थिक जीवन :

- कालीबंगा के भग्नावशेषों से अनुमान लगाया जा सकता है कि अधिकांश लोगों का जीवन सामान्य रूप से समृद्ध था। सुख एवं समृद्धि के लिए लोगों ने विभिन्न साधनों का उपयोग किया था।
- कालीबंगा के निवासी कौन-कौन से पशु पालते थे, इसका ज्ञान हमें पशुओं के अस्थि अवशेषों, मृद पात्रों पर किये गये चित्रांकनों, मुद्रांकनों तथा खिलौनों से होता है। ये भेड़-बकरी, गाय, भैंस, बैल, भैंसा तथा सुअर आदि पशुओं को पालते थे। कालीबंगा के निवासी ऊँट भी पालते थे। कुत्ता भी उनका पालतू जीव था ।

- **सरस्वती दृषद्वती नदियों** द्वारा लाई जाने वाली मिट्टी कृषि जन्य उत्पादों के लिए बहुत उपजाऊ थी। इसमें वे जौ और गेहूँ की खेती करते थे। हल लकड़ी के रहे होंगे। सिंचाई के लिए नदी जल एवं वर्षा पर निर्भर थे। कालीबंगा के कृषक निश्चय ही 'अतिरिक्त उत्पादन' करते थे।
- हड़प्पा सभ्यता के नगरों को समृद्धि का प्रमुख कारण व्यापार एवं वाणिज्य था। यह जल एवं स्थल दोनों मार्गों से होता था। **लोथल (गुजरात)** इस सभ्यता में तत्कालीन युग का एक महत्त्वपूर्ण **सामुद्रिक व्यापारिक** केन्द्र था।
- कालीबंगा से मुख्यतः हड़प्पा संस्कृति के मुख्य केन्द्रों को अनाज, मनके तथा ताँबा भेजा जाता था।
- ताँबे का प्रयोग, अस्त्र-शस्त्र तथा दैनिक जीवन में उपयोग आने वाले उपकरण, बर्तन एवं आभूषण बनाने में होता था ।
- स्थानीय उद्योग पर्याप्त विकसित थे। कुंभकार का **मृदभाण्ड उद्योग** अत्यन्त विकसित था।
- वह विभिन्न प्रकार के मृदभाण्ड चाक पर बनाता था, जिन्हें भट्टों में अच्छी तरह पकाया जाता था। मृद्भाण्डों में मुख्यरूप से मर्तबान, कलश, बीकर, टस्तरियाँ, प्याले, टोंटीदार बर्तन, डिंद्रित भाण्ड एवं थालियाँ शामिल हैं। हस्त निर्मित कुछ बड़े मृदभाण्ड भी प्राप्त हुए हैं जो संभवतः अन्न आदि संग्रह हेतु काम में लिए जाते थे।
- इन मृदभाण्डों पर **काले एवं सफेद** वर्णकों से चित्रण भी किया जाता था, जिसमें आड़ी-तिरछी रेखाएँ, लूप, बिन्दुओं का समूह, वर्ग, वर्ग जालक, त्रिभुज, तरंगाकार रेखाएँ अर्द्धवृत्त, एक-दूसरे को काटते वृत्त, शल्कों का समूह आदि के प्रारूपण प्रमुख हैं।
- इसके अतिरिक्त पीपल की पत्तियों तथा चौपत्तिया फूल आदि वानस्पतिक पादपों का अंकन भी प्राप्त हुआ है।
- बड़े बर्तनों पर **'कुरेदकर'** भी **अलंकरण** किया गया है। किन्हीं-किन्हीं मृदपात्रों पर 'ठप्पे ' भी लगे हुए मिले हैं और किसी-किसी पर तत्कालीन लिपि में लिखे लेख भी प्राप्त हुए हैं। उत्खनन में विभिन्न प्रकार की मुद्राएँ (मोहरें), मूर्तियाँ, चूड़ियाँ, मनके, औजार आदि से ज्ञात होता है कि हड़प्पा सभ्यता कालीन कालीबंगा समाज में शिल्पकला का उचित स्थान रहा है ।
- सोना, चाँदी अर्द्ध बहुमूल्य पत्थर, शंख से आभूषणों का निर्माण किया जाता था। स्त्रियाँ कानों में कर्णाभरण, कर्णफूल, बालियाँ आदि पहनती थी एवं बालों में पिनों का प्रयोग करती थी गले में मनकों के हार धारण करती थी।
- हाथों में शंख, मिट्टी, ताम्र एवं **सेलखड़ी** से निर्मित्त चूड़ियाँ धारण करती थी। अंगुलियों में अंगूठी पहनती थी (एक शव के साथ ताम्र-दर्पण एवं कान के पास कुण्डल भी मिला है।
- स्पष्टतया कालीबंगा निवासी **प्रसाधन प्रेमी** थे।
- कालीबंगा उत्खनन की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यह भी है कि इसने सैन्धव लिपि की पहचान करने के प्रयास में एक ठोस दिशा-निर्देश प्रस्तुत किया है।
- यहाँ से प्राप्त एक सैन्धव लिपि युक्त मृदुपात्र पर लिपि की **ओवर लैपिंग** (एक-दूसरे पर आये अक्षर) ने यह सिद्ध कर दिया है कि यह लिपि दाहिने से बायें की ओर लिखी जाती थी।

5.	ताम्रयुगीन	**गणेश्वर (सीकर),** साबणियां, पूंगल (बीकानेर), बूढ़ापुष्कर (अजमेर), **बेणेश्वर (डूंगरपुर),** नन्दलालपुरा, किराड़ोत, चीथबाड़ी (जयपुर), कुराड़ा (परबतसर), पलाना (जालौर), मलाह (भरतपुर), कोलमाहौली (सवाईमाधोपुर)
6.	लौह युगीन	**नोह (भरतपुर), सुनारी (झुंझुनू),** विराटनगर, जोधपुरा, सांभर (जयपुर), रैढ़, नगर, नैणवा, भीनमाल (जालौर), नगरी (चित्तौड़गढ़), चक-84, तरखानवाला (गंगानगर), ईसवाल (उदयपुर)

- बागौर – भीलवाड़ा
- कालीबंगा – हनुमानगढ़
- खोजकर्ता - अमलानंद घोष
- आहड़ – (उदयपुर)- अक्षयकीर्ति व्यास
- बैराठ – (जयपुर)- दयाराम साहनी 1936-37 में
- गणेश्वर (सीकर)- रत्नचंद्र अग्रवाल द्वारा उत्खनन , ताम्रयुगीन सभ्यता
- गिलुण्ड (राजसमंद)- बी .बी .लाल
- रंगहमल (हनुमानगढ़) – डॉ. ध्नारिड द्वारा उत्खनन
- ओझियाना (भीलवाड़ा)- B.R. मीणा द्वारा उत्खनन
- नगरी (चितौड़) – डॉ. डी . आर . भण्डारकर
- सुनारी (झुंझनु)- लोहा गलाने की प्राचीन भट्टिया
- जोधपुर (जयपुर)- R. C. अग्रवाल द्वारा उत्खनन
- तिलवाड़ा (बाड़मेर)- V.N. मिश्र
- रैढ (Tonk)- दयाराम साहनी
- नगर (Tonk) – कृष्ण देव
- भिनमाल (जालौर)- रतनचंद्र अग्रवाल
- नोह (भरतपुर)- रतनचंद्र अग्रवाल

लेखक	**ग्रंथ**
करणीदान	सूरज प्रकाश
दोलतविजय	खुमानरासो
पद्मनाभ	**कान्हड़दे प्रबंध**
जगजीवन भट्ट	अजितोदय
ए हिस्ट्री ऑफ राजस्थान	रीमा हूजा
पृथ्वीराज विजय	जयानक
वंशभास्कर	सूर्यमल मिश्रण

अभ्यास प्रश्न

1. "ए सर्वे वर्क ऑफ एनशिएन्ट साइट्स अलोंग दी लोस्ट सरस्वती रिवर" किसका कार्य था?

(a) एम. आर. मुग़ल (b) ओरैल स्टैन
(c) हरमन गोइट्ज (d) वी. एन. मिश्रा
उत्तर :- b

2. प्राचीन सरस्वती नदी के किनारे बसी राजस्थान की सबसे प्राचीन सभ्यता कौनसी है?

(a) कालीबंगा (b) आहड़
(c) गिलूण्ड (d) गणेश्वर
उत्तर :- a

3. निम्नांकित में से किस इतिहासवेत्ता ने कालीबंगा को सिंधु घांटी साम्राज्य की तृतीय राजधानी कहा है?

(a) जी. एच. ओझा (b) श्यामल दास
(c) दशरथ शर्मा (d) दयाराम साहनी
उत्तर :- c

4. राजस्थान की किस सभ्यता को ताम्रयुगीन सभ्यता की जननी कहते हैं?

(a) नागौर (b) गिलूण्ड
(c) आहड़ (d) गणेश्वर

उत्तर :- d

5. प्राचीन भारत के टाटानगर के नाम से विख्यात सभ्यता है?

(a) तिलवाड़ा (b) नलियासर

(c) जोधपुरा (d) रैढ़

उत्तर :- d

6. मालव सिक्के व आहत मुद्राएँ किस सभ्यता के अवशेष हैं?
(a) जोधपुरा (b) रैढ़
(a) नगर (मालव नगर) (d) नलियासर

उत्तर :- c

7. कान्तली नदी के किनारे स्थित गणेश्वर की सभ्यता का उत्खनन किसके नेतृत्व में हुआ?
(a) आर.सी. अग्रवाल व एच.एम. साँकलिया
(b) आर.सी. अग्रवाल व अमलानंद घोष
(c) आर.सी. अग्रवाल व विजयकुमार
(d) आर.सी. अग्रवाल व अक्षय कीर्ति व्यास

8. इनमें से कौनसा स्थल लौहयुगीन सभ्यता से सम्बन्धित नहीं हैं?
(a) डेरा (b) जोधपुरा
(c) विराटनगर (d) आहड़

उत्तर :- D

9. निम्न में से कौन कालीबंगा सभ्यता से सम्बन्धित नहीं हैं-
(a) अमलानंद घोष (b) बी.बी. लाल
(c) बी.के. थापर (d) आर.सी. अग्रवाल

उत्तर :- D

10. एक घर में एक साथ छः चूल्हे किस पुरातात्विक स्थल में प्राप्त हुए हैं?
(a) कालीबंगा (b) आहड़
(c) गिलूण्ड (d) बागोर

उत्तर :- b

अध्याय – 2

राजस्थान के इतिहास की महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ

❖ प्रमुख राजवंश

गुर्जर प्रतिहार वंश

- गुर्जर प्रतिहारों ने लगभग 200 सालों तक अरब आक्रमणकारियों का प्रतिरोध किया।
- डॉ. आर सी. मजूमदार के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों ने छठी से ।।वीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का कार्य किया।
- जोधपुर के **बाँक शिलालेख** के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों का अधिवास मारवाड़ में लगभग 6वीं शताब्दी के द्वितीय चरण में हो चुका था।
- 8वीं-10वीं शताब्दी में उत्तर भारत में मंदिर व स्थापत्य निर्माण शैली **महाभारत शैली / गुर्जर-प्रतिहार शैली** प्रचलित थी।
- अग्निकुल के राजपूतों में सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रतिहार वंश था, जो गुर्जरों की शाखा या गुर्जरात्रा प्रदेश से संबंधित होने के कारण इतिहास में **गुर्जर-प्रतिहार** के नाम से जाना गया।
- गुर्जर प्रतिहारों का प्रभाव केन्द्र मारवाड़ था। गुर्जरात्रा प्रदेश में रहने के कारण प्रतिहार **गुर्जर प्रतिहार** कहलाए।
- गुर्जरात्रा प्रदेश की राजधानी **"भीनमाल (जालौर)"** थी। बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक ' हर्षचरित ' में गुर्जरों का वर्णन किया है।
- इस वंश की प्राचीनता बादामी के चालुक्य नरेश पुल्केशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में 'गुर्जर जाति' के **सर्वप्रथम** उल्लेख से मिलती है।
- डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनुसार-प्रतिहार शब्द का प्रयोग मण्डौर की प्रतिहार जाति के लिए हुआ है क्योंकि प्रतिहार अपने आप को लक्ष्मण जी का वंशज मानते थे।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग के यात्रा वृतांत (ग्रंथ) सियूकी में **कु-ची-लो (गुर्जर)** देश का उल्लेख करता है।

- जिसकी राजधानी **पि-लो-मो-लो** (भीनमाल) में थी । अरबी यात्रियों ने गुर्जरों को **'जुर्न'** भी कहा है ।
- **अल मसूदी प्रतिहारों** को अल गुर्जर तथा प्रतिहार राजा को **'बोरा'** कहकर पुकारता है। भगवान लाल इन्द्रजी ने गुर्जरों को 'गुजर' माना है, जो गुजरात में रहने के कारण गुर्जर कहलाए ।
- देवली, राधनपुर तथा करडाह अभिलेखों में प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है । डॉ. गौरीशंकर ओझा प्रतिहारों को क्षत्रिय मानते हैं । जॉर्ज केनेडी गुर्जर प्रतिहारों को **ईरानी मूल** के बताते हैं ।
- **मिस्टर बैंक्सन** ने बम्बई गजेटियर में गुर्जरों को विदेशी माना है ।
- प्रतिहार राजवंश महामारू मंदिर निर्माण वास्तुशैली का संरक्षक था । **कनिंघम** ने गुर्जर प्रतिहारों को कुषाणवंशी कहा है ।
- डॉ. भंडारकर ने गुर्जर प्रतिहारों को खिज्रों की संतान बताकर विदेशी साबित किया है।
- स्मिथ स्टेनफोनो ने गुर्जर प्रतिहारों को हूणवंशी कहा है ।
- भोज गुर्जर प्रतिहार वंश का शासक था ।
- भोज द्वितीय प्रतिहार राजा के काल में प्रसिद्ध ग्वालियर प्रशस्ति की रचना की गई। **मुहणौत नैणसी** (मारवाड़ रा परगना री विगत) के अनुसार-गुर्जर प्रतिहारों की कुल 26 शाखाएं थी इनमें से दो प्रमुख थी - मण्डौर व भीनमाल ।
- गुर्जर प्रतिहारों की कुल देवी चामुंडा माता थी ।

भीनमाल शाखा (जालौर)
गुर्जर प्रतिहार वंश

- **गुर्जर प्रतिहार वंश** – प्रतिहार शब्द वास्तव में पदनाम है जिसका अर्थ द्वारपाल है। अभिलेखिक रूप से गुर्जर जाति का उल्लेख सर्वप्रथम चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय के एहोल अभिलेख में हुआ है।
- उत्तर-पश्चिम भारत में गुर्जर प्रतिहार वंश का शासन छठी से बारहवीं शताब्दी तक रहा।
- इतिहासकार रमेशचन्द्र मजूमदार ने गुर्जर प्रतिहार को छठी से बारहवीं शताब्दी तक अरब आक्रमणकारियों के लिए बाधक का काम करने वाला बताया है।
- गुर्जरात्रा (गुर्जर प्रदेश) के स्वामी होने के कारण प्रतिहारों को गुर्जर प्रतिहार कहा गया है।
- नीलगुण्ड, राधनपुर, देवली तथा करहाड़ के अभिलेखों में इन्हें गुर्जर कहा गया।
- मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में नागभट्ट को रामका प्रतिहार तथा विशुद्ध क्षत्रिय कहा गया है।
- अरब यात्रियों ने इनके लिए 'जुर्न' शब्द का प्रयोग किया है। अलमसूदी ने गुर्जर प्रतिहारों को 'अल गुजर' तथा राजा को 'बोरा' कहा है।
- राजशेखर ने अपने ग्रंथ 'विद्वशालभंजिका' में प्रतिहार महेन्द्रपाल को रघुकुल तिलक (सूर्यवंशी) लिखा है।
- मुहणोत नैणसी ने प्रतिहारों की 26 शाखाओं का उल्लेख किया है।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने ग्रंथ 'सियूकी' में गुर्जर राज्य को 'कु-चे-लो'(गुर्जर)तथा इसकी राजधानी 'पीलोमोलो' (भीनमाल) बताया है।
- कवि पम्प ने अपने ग्रंथ पम्पभारत' में कन्नौज शासक महीपाल को गुर्जर राजा बताया है।
- कैनेडी ने प्रतिहारों को ईरानी मूल का बताया है।
- उद्योतन सूरी ने अपने ग्रंथ 'कुवलयमाला' में गुर्जर शब्द का प्रयोग एक जाति विशेष के रूप में किया है।
- डॉ. भंडारकर ने प्रतिहारा को विदेशी गुर्जर जाति की संतान माना है।

मण्डोर के प्रतिहार

- मण्डोर के प्रतिहार गुर्जर प्रतिहारों की 26 शाखाओं में से सबसे महत्त्वपूर्ण एवं प्राचीन मण्डोर के प्रतिहार थे।
- मण्डोर के प्रतिहार स्वयं को 'हरिश्चन्द्र नामक ब्राह्मण' (रोहिलद्धि)का वंशज बताते हैं।
- हरिश्चन्द्र के दो पत्नियां थी- एक ब्राह्मणी और दूसरी क्षत्राणी भद्रा। उसकी ब्राह्मणी पत्नी से उत्पन्न संतान प्रतिहार ब्राह्मण तथा क्षत्राणी भद्रा से उत्पन्न संतान क्षत्रिय प्रतिहार कहलाये।
- हरिश्चन्द्र की रानी भद्रा से चार पुत्र- भोगभट्ट, कदक, रज्जिल और दद्द उत्पन्न हुए।
- इन चारों ने मिलकर मण्डोर को जीता तथा यहाँ गुर्जर प्रतिहार वंश की स्थापना की।

- मण्डोर के प्रतिहारों की वंशावली हरिश्चन्द्र के तीसरे पुत्र रज्जिल से प्रारंभ होती है।

रज्जिल

- हरिश्चन्द्र के चार पुत्रों में से रज्जिल मण्डोर का शासक बना।

नागभट्ट प्रथम

- यह रज्जिल का पौत्र था।
- इसने मेड़ता को अपनी राजधानी बनाया।

शीलुक

- शीलुक ने वल्ल मण्डल के शासक भाटी देवराज को हराकर अपने राज्य की सीमा का वल्ल तक विस्तार किया।

कक्क

- यह शीलुक का पौत्र था।
- इसने मुंगेर के युद्ध में पाल वंश के शासक धर्मपाल को पराजित किया।
- इसके दो पुत्र थे- बाउक तथा कक्कुक।

बाउक

- बाउक एक प्रतापी शासक था जिसने अपने शत्रु नन्दवल्लभ को मारकर भूअकूप पर अधिकार कर लिया।
- इसका 837 ई. का 'मण्डोर (जोधपुर) का शिलालेख' प्राप्त हुआ है जिसमें बाउक ने अपने वंश का वर्णन अंकित करवाया।
- बाउक ने मयूर नामक राजा को पराजित किया था।

कक्कुक

- बाउक के बाद उसका भाई कक्कुक मण्डोर का शासक बना।
- घटियाला से प्राप्त दोनों शिलालेख कक्कुक के समय के हैं।
- इसने रोहिंसकूप (घटियाला) के निकट गावों में बाजार बनवाये तथा व्यापार में वृद्धि की।
- कक्कुक के द्वारा घटियाला तथा मण्डोर में जयस्तम्भ भी स्थापित करवाये गये।
- कालान्तर में मण्डोर के आस-पास के क्षेत्र पर चौहानों का अधिकार हो गया लेकिन मण्डोर प्रतिहारों की इन्दा शाखा के अधीन रहा।
- इन्दा प्रतिहारों ने राठौड़ चूँडा के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित कर मण्डोर का क्षेत्र राठौड़ों को दहेज में दे दिया।
- इस घटना के साथ ही मण्डोर प्रतिहारों का राजनीतिकी इतिहास समाप्त हो गया।

भड़ौंच के गुर्जर प्रतिहार

दद्द प्रथम

- भड़ौंच के गुर्जर राज्य का संस्थापक हरिश्चन्द्र का पुत्र दद्द प्रथम था।
- इस शाखा के 629 ई. से 641 ई. के कुछ दानपत्र मिले हैं जिनसे यह सिद्ध होता है कि नान्दीपुर इन गुर्जर प्रतिहारों की राजधानी थी।
- दद्द प्रथम ने नागवंशियों तथा वनवासी राजा निरिहुलक के राज्य पर अधिकार किया था।

जयभट्ट प्रथम

- जयभट्ट प्रथम दद्द प्रथम का पुत्र था। इसकी उपाधि 'वीतराग' थी।
- जयभट्ट प्रथम हर्षवर्धन के समकालीन था।
- संखेड़ा दानपत्रों से उसकी विजयों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।
- उमेता, ललुआ तथा बेगुमरा शिलालेखों के अनुसार जयभट्ट प्रथम ने वल्मी की सेना को काठियावाड़ प्रान्त में पराजित किया था।
- इसने कलचुरियों को भी पराजित किया था।

दद्द द्वितीय

- जयभट्ट प्रथम के बाद उसका पुत्र दद्द द्वितीय शासक बना, जिसकी उपाधि 'महाराजा प्रशांतराग' थी।
- बड़ौदा के संखेड़ा नामक स्थान से दद्द द्वितीय के दानपत्र प्राप्त हुए हैं जिनकी भाषा संस्कृत तथा लिपि ब्राह्मी है।
- दद्द द्वितीय के समय हर्षवर्धन ने वल्लभी के शासक ध्रुवसेन द्वितीय को पराजित किया।
- इस समय ध्रुवसेन द्वितीय ने दद्द द्वितीय के दरबार में शरण ली, जिसके बाद दद्द द्वितीय ने हर्षवर्धन से उसका राज्य वापस दिला दिया।

- **मारवाड़ का इतिहास**

राठौड़ वंश

राजस्थान के उत्तर-पश्चिम भाग में जिस राजपूत वंश का शासन हुआ उसे राठौड़ वंश कहा गया है । उसे मारवाड़ के नाम से जाना जाता है । मारवाड़ में पहले गुर्जर प्रतिहार वंश का राजा था । प्रतिहार यहाँ से कन्नौज (उत्तरप्रदेश) चले गये । फिर राठौड़ वंश की स्थापना इस भाग में हुई, तथा मारवाड़ की संकटकालीन राजधानी 'शिवाना दुर्ग ' को कहा जाता था ।

शाखा	स्थापना	संस्थापक
1. मारवाड़ (जोधपुर)	1240 ई.	राव सीहा
2. बीकानेर	1465 ई.	राव बीका
किशनगढ़	1609 ई.-	किशनसिंह

हम इस अध्याय में मारवाड़ के राठौड़ वंश का विस्तृत अध्ययन करेंगे ।

उत्पत्ति

- राठौड़ शब्द की उत्पत्ति राष्ट्रकूट शब्द से मानी जाती है ।
- पृथ्वीराजरासो, नैणसी, दयालदास और कर्नल टॉड राठौड़ों को कन्नौज के जयचन्द गहड़वाल का वंशज मानते हैं । ।
- "राठौड़ वंश महाकाव्य में राठौड़ों की उत्पत्ति शिव के शीश पर स्थित चन्द्रमा से बताई है ।
- डॉ. हार्नली ने सर्वप्रथम राठौड़ों को गहड़वालों से भिन्न माना है । इस मत का समर्थन डा. ओझा ने किया है ।
- डॉ. ओझा ने मारवाड़ के राठौड़ों को बदायूँ के राठौड़ों का वंशज माना है ।

मारवाड़ (जोधपुर) के राठौड़ संस्थापक – राव सीहा (1240 – 1273)

- राव सीहा जी राजस्थान में स्वतंत्र राठौड़ राज्य के संस्थापक थे । राव सीहा जी के वीर वंशज अपने शौर्य, वीरता एवं पराक्रम व तलवार के धनी रहे हैं । मारवाड़ में राव सीहा जी द्वारा राठौड़ साम्राज्य का विस्तार करने में उनके वंशजो में राव धुहड़ जी, राजपाल जी, जालन सिंह जी, राव छाड़ा जी, राव तीड़ा जी, खीम करण जी, राव वीरम दे, राव चूँड़ा जी, राव रिदमल जी, राव जोधा, राव बीका, बीदा, दूदा, कानध्ल, मालदेव का विशेष क्रमबद्ध योगदान रहा है। इनके वंशजों में दुर्गादास व अमर सिंह जैसे इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति हुए । राव सिहा सेतराम जी के आठ पुत्रों में सबसे बड़े थे।

चेतराम सम्राट के, पुत्र अस्ट महावीर !
जिसमें सिहों जेस्ठ सूत, महारथी रणधीर ।

- राव सीहा जी सं. 1268 के लगभग पुष्कर की तीर्थ यात्रा के समय मारवाड़ आये थे उस मारवाड़ की जनता मीणों, मेरों आदि की लूटपाट से पीड़ित थी, राव सिहा के आगमन की सूचना पर पाली नगर के पालीवाल ब्राह्मण अपने मुखिया जसोधर के साथ सीहा जी मिलकर पाली नगर को लूटपाट व अत्याचारों से मुक्त करने की प्रार्थना की । अपनी तीर्थ यात्रा से लौटने के बाद राव सीहा जी ने भाइयों व फलौदी के जगमाल की सहायता से पाली में हो रहे अत्याचारों पर काबू पा लिया एवं वहां शांति व शासन व्यवस्था कायम की, जिससे पाली नगर की व्यापारिक उन्नति होने लगी।

आठों में सीहा बड़ा, देव गरुड़ है साथ ।
बनकर छोडिया कन्नोज में, पाली मारा हाथ ।
पाली के अलावा भीनमाल के शासक के अत्याचारों की जनता की शिकायत पर जनता को अत्याचारों से मुक्त कराया ।
भीनमाल लिधी भडे,सिहे साल बजाय।
दत दीन्हो सत सग्रहियो, ओजस कठे न जाय।

- पाली व भीनमाल में राठौड़ राज्य स्थापित करने के बाद सीहा जी ने खेड़ पर आक्रमण कर विजय कर लिया।
- इसी दौरान शाही सेना ने अचानक पाली पर हमला कर लूटपाट शुरू करदी, हमले की सूचना मिलते ही सीहा जी पाली से 18 किलोमीटर दूर बिठू गावं में शाही सेना के खिलाफ आ डटे, और मुस्लिम सेना को खधेड़ दिया । वि. सं. 1330 कार्तिक कृष्ण द्वादशी सोमवार को करीब 80 वर्ष

की उम्र में सीहा जी का स्वर्गवास हुआ व उनकी सोलंकी रानी पार्वती इनके साथ सती हुई ।

- सीहा जी की रानी (पाटन के शासक जय सिंह सोलंकी की पुत्री) से बड़े पुत्र आसनाथ जी हुए जो पिता के बाद मारवाड़ के शासक बने । राव सिहं जी राजस्थान में राठौड़ राज्य की नींव डालने वाले पहले व्यक्ति थे ।

आसनाथ (1273 – 1291 ई.)

- सीहा के बाद आसनाथ राठौड़ों का शासक बना। उसने गूँदोच को केन्द्र बनाया। 1291 ई. में सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय पाली की रक्षा करते हुए आसनाथ 1291 ई. में वीरगति को प्राप्त हुआ ।
- आसनाथ के पुत्र धूहड़ ने राठौड़ों की कुलदेवी चक्रेश्वरी नागणेचीद्ध की मूर्ति कर्नाटक से लाकर नगाणा गांव (बाड़मेर) मे स्थापित कराई ।
- इनके छोटे भाई का नाम धांधलश् था। ये लोक देवता पाबू जी के पिता थे।

राव चूँड़ा (1383 – 1423)

- राव चूँड़ा विरमदेव का पुत्र था ।
- राव चूँड़ा राठौड़ों का प्रथम महत्वपूर्ण शासक माना जाता हैं । अपने पिता की मृत्यु के समय चूँड़ा छः वर्ष का था । इसलिए उसकी माता ने उसे चाचा मल्लिनाथ के पास भेज दिया। मल्लिनाथ ने चूँड़ा को सालोड़ी गाँव जागीर में दी थी ।
- उसने इन्दा शाखा के राजा की पुत्री किशोर कुंवरी (मण्डौर ए जोधपुर) से विवाह किया तथा दहेज में उसे मण्डौर दुर्ग मिला ।
- चूँड़ा ने इन्दा परिहारों के साथ मिलकर मण्डौर को मालवा के सूबेदार से छीन लिया तथा मण्डौर को अपनी राजधानी बनाया।
- इस प्रकार इन्दा परिहारों को अपना सहयोगी बनाकर राव चूँड़ा ने मारवाड़ में सामन्त प्रथा की स्थापना की।
- उसने जलाल खाँ खोखर को पराजित कर नागौर पर अधिकार कर लिया था ।
- परन्तु जैसलमेर के भाटियों और जांगल प्रदेश के सांखलाओं के नागौर पर आक्रमण के समय 1423 ई. में चूँड़ा मारा गया ।
- राव चूँड़ा ने नागौर के पास चूण्डासर कस्बा बसाया।
- उसकी रानी चाँद कँवर ने जोधपुर की चाँद बावड़ी का निर्माण करवाया था ।

रावल मल्लिनाथ

राजस्थान के प्रसिद्ध लोक देवता हैं इन्होंने अपनी राजधानी 'मेवानगर' (नाकोड़ा) बनायी। मल्लीनाथ के नाम पर ही मारवाड़ क्षेत्र को मालाणी कहते हैं ।

- भाई 'वीरम' (मल्लीनाथ ने अपने बेटे जगमाल को राजा न बनाकर वीरम को राजा बना दिया।)

कान्हा (1423 – 1427)

चूँड़ा ने अपनी मोहिलाणी रानी के प्रभाव में आकर उसके पुत्र कान्हा को अपना उत्तराधिकारी बनाया जबकि रणमल, चूँड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था।

- रणमल मेवाड़ के राणा लाखा की शरण में चला गया तथा अपनी बहन हंसाबाई का विवाह लाखा से कर दिया। राणा ने उसे धणला गाँव जागीर में दिया।
- 1427 ई. में रणमल ने राणा मोकल की सहायता से मण्डौर पर अधिकार कर लिया। इस समय कान्हा का उत्तराधिकारी सत्ता मण्डौर का शासक था।
- ऐसा कहा जाता है कि राव कान्हा की मृत्यु 'करणी माता के हाथों हुई थी ।

राव रणमल, - (1427 – 1438)

राव रणमल, राव चूँड़ा का ज्येष्ठ पुत्र था जो उन्हें रानी चाँद कँवर से हुआ था ।

- परन्तु जब उसे राजा नहीं बनाया गया तो वह नाराज होकर मेवाड़ के राणा लक्ष सिंह (लाखा) की शरण में चला गया ।
- राणा लाखा ने रणमल को 'धणला' की जागीर प्रदान की ।
- रणमल ने अपनी बहन हंसाबाई का विवाह राणा लाखा से कर दिया । परन्तु उसने एक शर्त रखी जिसके अनुसार हंसाबाई का पुत्र ही मेवाड़ का शासक बने ।
- रणमल ने अपने समय में मारवाड़ और मेवाड़ रियासतों पर मजबूत नियंत्रण बना रखा था।
- रणमल ने अपने भाई तथा मारवाड़ के राजा 'कान्हा के साथ युद्ध किया तथा इस युद्ध में रणमल का

साथ मेवाड़ के मोकल ने दिया । इस युद्ध में कान्हा मारा गया ।

- मेवाड़ी सरदारों ने 1438 ई. में उसकी प्रेयसी भारमली की सहायता से चित्तौड़ में रणमल की हत्या कर दी । ऐसा कहा जाता है कि उसे उसकी प्रेयसी भारमली ने शराब में विष दिया था । इस तरह रणमल का अंत हुआ ।

राव जोधा (1438 – 1489)

1. राव 'रणमल' को रानी 'कोडमद' से जो पुत्र हुआ वही राव जोधा था ।
2. पिता रणमल की हत्या के बाद जोधा ने चित्तौड़ से भागकर बीकानेर के समीप काहुनी गाँव में शरण ली ।
3. चूँड़ा के नेतृत्व में मेवाड़ की सेना ने राठौड़ों की राजधानी मण्डौर पर अधिकार कर लिया। 15 वर्ष बाद राव जोधा मण्डौर पर पुनः अधिकार कर पाया।
4. राव जोधा ने 1453 ई. में मण्डौर राज्य को अपने अधीन किया ।
5. राव जोधा ने 13 मई 1459 ई. में जोधपुर नगर बसाया ।
6. राव जोधा ने 1459 ई. में चिड़ियाटुक पहाड़ी पर मेहरानगढ़ दुर्ग का निर्माण कराया ।
7. दुर्ग के निर्माण के राव जोधा ने अपनी राजधानी मण्डौर से जोधपुर स्थानातंरित की ।
8. राव जोधा ने लगभग 50 वर्ष तक शासन किया ।
9. इसी समय इनकी एक रानी हाड़ी जसमा देवी ने किले के पास 'रानीसर' तालाब बनवाया ।
10. राव जोधा ने अपनी हाड़ी रानी जसमा देवी के मोह में पड़कर उसके पुत्र सातलदेव को अपना उत्तराधिकारी बनाया, जबकि हकदार राव बीका था यहीं से उत्तराधिकार को लेकर कलह का बीज पड़ गया ।
11. राजा जोधा की मृत्यु 1489 ई. में हुई ।

मेहरानगढ़ दुर्ग

1. ज्ञात स्त्रोतों से यह विदित होता है कि मेहरानगढ़ की नींव का पहला पत्थर करणी माता (रिद्धि बाई) ने रखा था ।
2. इसकी नींव में राजा राम खड़ेला नामक व्यक्ति को जिंदा चुनवाया गया था ।
3. किपलिंग ने मेहरानगढ़ दुर्ग के लिए कहा कि – इस दुर्ग निर्माण शायद परियों व फरिश्तों ने किया था' ।
4. इसमें चामुण्डा माता का मंदिर, मानप्रकाश पुस्तकालय, फूलमहल , कीरत व धन्ना की छतरी इत्यादि के दर्शन होते हैं, तथा किलकिला, शम्भू बाण व गजनी खां, जो कि तोपों के नाम है, भी यहाँ देखने को मिलती है ।

आँवल-बावल की संधि (1453 ई.)

1. आँवल-बावल की संधि राणा कुम्भा और राव जोधा के मध्य हुई। जोधा ने अपनी पुत्री श्रृंगारदेवी का विवाह कुम्भा के पुत्र रायमल से कर दिया ।
2. राव जोधा द्वारा अपने पुत्रों और प्रमुख सरदारों में राज्य बाँटने के कारण राव जोधा को मारवाड़ रियासत में सामन्त प्रथा का वास्तविक संस्थापक माना जाता है ।
3. राव जोधा के पांचवे पुत्र राव बीका जी ने 'बिकानेर की स्थापना की तथा उसके पीछे इसी सामन्त प्रथा को एक कारण माना जाता है, जो राव जोधा ने स्थापित की ।

राव सातल (1489 – 1492)

1. जोधा के पुत्र राव सातल ने सातलमेर कस्बा बसाया था । उसकी भटियाणी रानी फूलां में जोधपुर में कुलेलाव तालाब बनवाया ।
2. अजमेर के हाकिम मल्लू खाँ के साथ पीपाड़ (जोधपुर) के युद्ध में घायल हो जाने के कारण राव सातल की मृत्यु (1492 ई.) हो गई । इस युद्ध में राव सातल विजयी रहा था ।

घुड़ला नृत्य का इतिहास और सातलदेव

- यह घटना पीपाड़ (जोधपुर) की है पीपाड़ में 140 कुंवारी कन्याएं गणगौर की पूजा कर रही थी । तभी वहां अजमेर के सूबेदार मल्लू खाँ का सेनापति घुड़ले खाँ आ गया और सभी कन्याओं को बंधक बना लिया । तब राव सातल देव ने घुड़ले खाँ पर आक्रमण कर सभी कन्याओं को मुक्त कराया तथा मुक्त होने की खुशी में कन्याएं नृत्य करने लगी । उस नृत्य को ही घुड़ला नृत्य कहा जाता है । यह घटना चैत्र कृष्ण अष्टमी को हुई तभी से इस तिथि को प्रतिवर्ष घुड़ला नृत्य किया

जाता है । इस नृत्य की शुरुआत घुड़ले खाँ की पुत्री गिन्दोली ने की थी ।

राव सूजा 1492 - 1515
राव गंगा 1515 – 1532

1. राव गंगा राव सूजा का पोता तथा राव बाघा जी का पुत्र था । तथा राव सूजा की मृत्यु के राव गंगा सिंहासन पर बैठे थे ।
2. राव गंगा ने अपने पुत्र मालदेव को 1527 के खानवा के युद्ध में राणा साँगा की सहायता के लिए भेजा था।
3. राव गांगा ने गांगेलाव तालाब, गांगा की बावड़ी व गंगश्याम जी के मंदिर का निर्माण करवाया । राव गंगा की सीसोदणी रानी उत्तमदे राणा साँगा की पुत्री थी । जोधपुर का पद्मसर तालाब इन्होंने ही बनवाया था ।
4. राव गांगा ने **सेवकी गाँव (जोधपुर)** के युद्ध में (1529 ई.) बीकानेर के राव जैतसी की सहायता से अपने विद्रोही चाचा शेखा और नागौर के दौलत खाँ की सेनाओं को पराजित किया ।
5. राव गंगा नशे का शौकिन था एक दिन जब वह नशे में धुत था तभी उसके पुत्र राव मालदेव ने उसकी हत्या कर दी ।
6. राव मालदेव को मारवाड़ का पितृहन्ता भी कहा जाता है । हालांकि कुछ विद्वान इस मत से सहमत नहीं है।

राव मालदेव (1532 – 1562)

- इतिहासकारों में राव मालदेव के पितृहन्ता होने को लेकर अलग अलग मत हैं ।
- पण्डित रेउ के अनुसार राव गंगा अफीम के नशे में महल की खिड़की से गिर पड़े।
- डा. ओझा ने मालदेव को गंगा का हत्यारा माना है ।
- नैणसी और बांकीदास ने इस घटना का कोई उल्लेख नहीं किया ।
- सोजत के किले में राज्याभिषेक के एक वर्ष बाद मालदेव जोधपुर गया /
- समकालीन फारसी इतिहासकारों ने राव मालदेव को 'हशमत वाला बादशाह' कहा हैं।

मालदेव व रूठी रानी उमादे

- जैसलमेर के भाटी शासक लूणकरण की पुत्री उमादे का विवाह 1536 ई. में राव मालदेव के साथ हुआ था । परन्तु विवाह के बाद वह मालदेव से रूठकर अजमेर के तारागढ़ में रहने लगी । वह राजस्थान के इतिहास में रूठीरानी के नाम से प्रसिद्ध है । अजमेर पर शेरशाह का अधिकार हो जाने के बाद वह कोसाने (जोधपुर) और गूँदोज (पाली) होते हुए अन्ततरू केलवा (राजसमंद) चली गई। मालदेव की मृत्यु पर वह सती हो गई। राव मालदेव ने पोकरण और मेड़ता के दुर्गों का निर्माण तथा सोजत, नागौर और सिवाणा के दुर्गों का जीर्णोद्धार करवाया था।

मालदेव के प्रमुख विजय अभियान

- नागौर विजय (1533 ई.) नागौर के दौलत खाँ को हीराबाड़ी के युद्ध में पराजित कर नागौर पर अधिकार कर लिया ।
- सिवाणा की विजय (1538 ई.) सिवाणा पर राव डूंगरसी का अधिकार था ।
- मेड़ता व अजमेर पर अधिकार (1538 ई.) वीरमदेव को पराजित कर राव मालदेव ने (1538 ई.) में मेड़ता व अजमेर पर अधिकार कर लिया (1538 ई.) वीरमदेव भागकर शेरशाह सूरी की शरण में चला गया ।

जालौर की विजय (1539 ई.)

- राठौड़ बीदा के नेतृत्व में मारवाड़ी सेना ने सिकन्दर खाँ को पराजित कर जालौर को जीत लिया ।
- भाद्राजूण और रायपुर पर अधिकार (1539 ई.)
- भाद्राजूण और रायपुर पर सींधलों का अधिकार था । सींधलों का नेता वीरा पराजित हुआ ।

बीकानेर विजय-पाहेबा का 1541 ई.

- पाहेबा का युद्ध मालदेव व राव जैतसी के मध्य 1541 ई. को हुआ । इस युद्ध में राव जैतसी मारा गया । तथा इस युद्ध मालदेव का सेनापति राव कूँपा था जो कि एक महान वीर व स्वामीभक्त सेनापति था । इस युद्ध के मालदेव ने बीकानेर पर अधिकार कर लिया ।
- झुंझुनू की जागीर देकर बीकानेर का प्रशासक नियुक्त कर दिया । राव जैतसी का पुत्र कल्याणमल अपना पैतृक राज्य पुनः प्राप्त करने के लिए शेरशाह सूरी के पास चला गया ।

- ***प्रमुख राजवंशों की प्रशासनिक तथा राजस्व व्यवस्था***

*मध्यकाल में राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था से तात्पर्य मुगलों से संपर्क के बाद से लेकर 18।8 ईस्वी में अंग्रेजों के साथ हुई संधियों की काल अवधि के अध्ययन से है । इस काल अवधि में राजस्थान में **22 छोटी बड़ी रियासतें** थी और अजमेर मुग़ल सूबा था।*

इन सभी रियासतों का अपना प्रशासनिक तंत्र था लेकिन, कुछ मौलिक विशेषताएं एकरूपता लिए हुए भी थी । रियासतें मुग़ल सूबे के अंतर्गत होने के कारण मुग़ल प्रभाव भी था ।

राजस्थान की मध्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था के मूलत : 3 आधार थे ।

- *सामान्य एवं सैनिक प्रशासन ।*
- *न्याय प्रशासन ।*
- *भू-राजस्व प्रशासन ।*

संपूर्ण शासन तंत्र राजा और सामन्त व्यवस्था पर आधारित था । राजस्थान की सामन्त व्यवस्था रक्त संबंध और कुलीय भावना पर आधारित थी । सर्वप्रथम कर्नल जेम्स टॉड ने यहाँ की सामन्त व्यवस्था को इंग्लैंड की फ्यूडल व्यवस्था के समान मानते हुए उल्लेख किया है।

राजस्थान की सामन्त व्यवस्था पर व्यापक शोध कार्य के बाद यह स्पष्ट हो गया है कि यहाँ की सामन्त व्यवस्था कर्नल टॉड द्वारा उल्लेखित पश्चिम के फ्यूडल व्यवस्था के समान स्वामी (राजा) और सेवक (सामन्त) पर आधारित नहीं थी ।

राजस्थान के सामन्त व्यवस्था रक्त संबंध एवं कुलीय भावना पर आधारित प्रशासनिक और सैनिक व्यवस्था थी ।

केन्द्रीय शासन (Central Government)

***राजा** – सम्पूर्ण शक्ति का सर्वोच्च केंद्र*

- ***प्रधान** – राजा के बाद प्रमुख । अलग-अलग रियासतों में अलग-अलग नाम – कोटा और बूँदी में दीवान, जैसलमेर, मारवाड़ मेवाड़ में प्रधान, जयपुर में मुसाहिब, बीकानेर में मुख्त्यार कहते थे।*
- *भरतपुर में राजा के बाद प्रधान को मुख्त्यार कहते थे ।*
- ***दीवान एवं बक्षी** – अधिकांशत : जहाँ तीन प्रमुख थे वहाँ बक्षी होते थे । यह सेना विभाग का प्रमुख होता था । जोधपुर में फौज बक्षी भी होता था।*
- ***नायब बक्षी** – सैनिकों व किलों पर होने वाले खर्च और सामन्तों की रेख का हिसाब रखता था ।*
- ***नोट – रेख** = एक जागीरदार की जागीर की वार्षिक आय होती थी ।*
- ***शिकदार**- मुग़ल प्रशासन के कोतवाल के समान होता था । यह गैर सैनिक कर्मचारियों के रोजगार सम्बंधी कार्य देखता था ।*

- ***सामन्ती श्रेणियां (Feudal System)***
- *कर्नल टॉड ने सामन्ती व्यवस्था को इंग्लैंड में चलने वाली फ्यूडल व्यवस्था के समान माना है।*

सामन्त श्रेणियां –

- ***मारवाड़**- चार प्रकार की राजवी, सरदार, गनायत, मुत्सद्दी*
- ***मेवाड़** – तीन श्रेणियां, जिन्हें उमराव कहा जाता था । सलूम्बर के सामन्त का विशेष स्थान ।*
- ***जयपुर** – पृथ्वीसिंह के समय श्रेणी विभाजन। 12 पुत्रों के नाम से 12 स्थायी जागीरे चली जिन्हें कोटडी कहा जाता था।*
- ***कोटा**- में सामंत राजवी कहलाते थे।*
- ***बीकानेर** – में सामन्तों की तीन श्रेणियां थी।*
- *जैसलमेर में दो श्रेणियां थी।*

अन्य श्रेणियाँ – भौमिया सामन्त, ग्रासिया सामन्त

सामन्त व्यवस्था (Feudal system)

राजस्थान में परम्परागत शासन में राजा -सामन्त का संबंध भाई-बंधु का था। मुग़ल काल में सामन्त व्यवस्था में परिवर्तन । अब स्थिति स्वामी – सेवक की स्थिति।

सेवाओं के साथ कर व्यवस्था –

परम्परागत शासन में सामन्त केवल सेवाएं देता था। लेकिन मुग़ल काल से कर व्यवस्था भी निर्धारित की गयी।

सामन्त अब

- **पट्टा रेख** – राजा द्वारा जागीर के पट्टे में उल्लेखित अनुमानित राजस्व।
- **भरत रेख** – राजा द्वारा सामन्त को प्रदत जागीर के पट्टे में उल्लेखित रेख के अनुसार राजस्व ।
- **उत्तराधिकार शुल्क** – जागीर के नये उत्तराधिकारी कर से वसूल किया जाने वाला कर । अलग-अलग रियासतों में इसके नाम -मारवाड़ – पहले पेशकशी फिर हुक्मनामा, मेवाड़ और जयपुर में नजराना, अन्य रियासतों मे कैद खालसा या तलवार बंधाई नाम था।, जैसलमेर एकमात्र रियासत जहाँ उत्तराधिकारी शुल्क नहीं लिया जाता था।
- **नजराना कर**- राजा के बड़े पुत्र के विवाह पर दिया जाने वाला कर ।
- न्योत कर
- तीर्थ यात्रा कर

भूमि और भू स्वामित्व (Land and Land Ownership)

भूमि दो भागों में विभाजित थी –

1. **खालसा भूमि (Khalsa land)**- जो कि सीधे शासक के नियंत्रण में होती थी जिसे केंद्रीय भूमि भी कह सकते हैं ।
2. **जागीर भूमि** – यह चार प्रकार की थी ।

सामन्त जागीर (Feudal Estate) – यह जागीर भूमि जन्मजात जागीर थी जिसका लगान सामन्त द्वारा वसूल किया जाता था।

हुकूमत जागीर – यह मुत्सद्दियों को दी जाती थी।

भौम जागीर – राज्य को निश्चित सेवाएँ व कर देते थे।

शाषण जागीर – यह माफी जागीर भी कहलाती थी। यह कर मुक्त जागीर थी । धर्मार्थ, शिक्षण कार्य, साहित्य लेखन कार्य, चारण व भाट आदि को अनुदान स्वरूप दी जाती थी।

इसके अलावा भूमि को और दो भागों में बांटा गया-

- कृषि भूमि (Agricultural land) – खेती योग्य भूमि।
- चरनोता भूमि (Charnote land)- पशुओं के लिए चारा उगाया जाता था।

किसान- दो प्रकार के थे-

- **बापीदार** – खुदकाश्तकार और भूमि का स्थाई स्वामी
- **गैरबापीदार** – शिकमी काश्तकार और भूमि पर वंशानुगत अधिकार नहीं। ये खेतीहर मजदूर थे।

दाखला – किसानों को दी जाने वाली भूमि का पट्टा जो जागीरदार के रजिस्टर में दर्ज रहता था।

लगान वसूली की विधि (Tax collection method)

लगान वसूली की तीन विधि अपनाते थे-

लाटा या बटाई विधि- फसल कटने योग्य होने पर लगान वसूली के लिए नियुक्त अधिकारी की देखरेख में कटाई तथा धान साफ होने पर राज्य का भाग अलग किया जाता था।

कून्ता विधि- खड़ी फसल को देखकर अनुमानित लगान निर्धारित करना ।

अन्य विधि – इसे तीन भागों में – मुकाता, डोरी और घूघरी

डोरी और मुकाता में कर निर्धारण एक मुश्त होता था। नकद कर भी लिया जाता था । डोरी कर निर्धारण में नापे गये भू-भाग का निर्धारण करके वसूल करना।

घूघरी कर विधि के अनुसार शासक, सामन्त एवं जागीरदार किसान को जितनी घूघरी (बीज) देता था उतना ही अनाज के रूप में लेता था । दूसरी घूघरी विधि में प्रति कुआं या खेत की पैदावार पर निर्भर था।

मध्यकाल में राजस्थान में प्रचलित विभिन्न लाग-बाग ।

• प्रशासनिक व्यवस्था

भू-राजस्व के अतिरिक्त कृषकों से कई अन्य प्रकार के कर वसूल किए जाते थे उन्हें लाग - बाग कहा जाता था लाग-बाग दो प्रकार के थे-

कला एवं संस्कृति

अध्याय – I
स्थापत्य कला की प्रमुख विशेषताएं

- **मंदिर**

भारत में मंदिर निर्माण का प्रारंभिक व प्रायोगिक काल गुप्तकाल के प्रारंभ से सातवीं शताब्दी तक का काल माना जाता है।
राजस्थान में मंदिर निर्माण की शैलियां-

(I.) नागर या आर्य शैली-

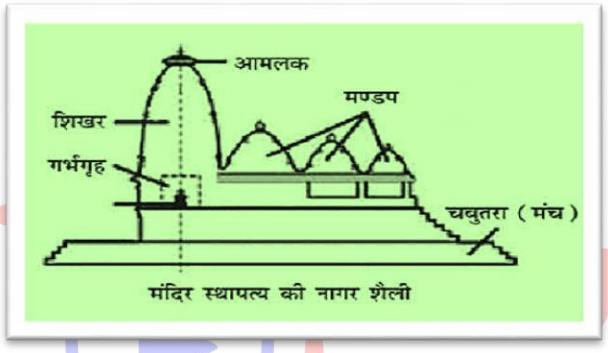

मंदिर स्थापत्य की नागर शैली

- उत्तरी भारत की शैली जिसमें मंदिर ऊँचे चबूतरे पर बना होता है।
- मंदिर का शिखर आमलक और कलश में विभेदित होता है।
- मंदिर में मूर्ति वाला स्थान गर्भगृह वर्गाकार होता है।
- पर्सी ब्राउन ने नागर शैली को उत्तर भारतीय आर्य शैली कहा ।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न हैं- किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर),दधिमति माता मंदिर (नागौर),ओसिया के मंदिर (जोधपुर)।

(2.) भूमिज शैली

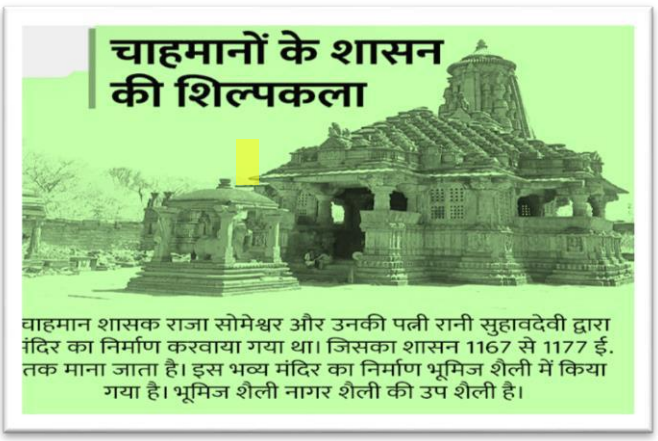

वाहमान शासक राजा सोमेश्वर और उनकी पत्नी रानी सुहावदेवी द्वारा मंदिर का निर्माण करवाया गया था। जिसका शासन 1167 से 1177 ई. तक माना जाता है। इस भव्य मंदिर का निर्माण भूमिज शैली में किया गया है। भूमिज शैली नागर शैली की उप शैली है।

- यह नागर शैली के अंतर्गत आती है।
- इसमें प्रदक्षिणा पथ खुला होता है।
- भूमिज शैली का सबसे प्राचीन मंदिर पाली में स्थित सेवाड़ी जैन मंदिर है।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ है, निम्न हैं- उंडेश्वर मंदिर (बिजौलिया) 1025 ई., महानालेश्वर मंदिर (मैनाल, भीलवाड़ा) 1075 ई., अद्भुत नाथ जी का मंदिर (चितौड़गढ़)।

(3.) द्रविड़ शैली

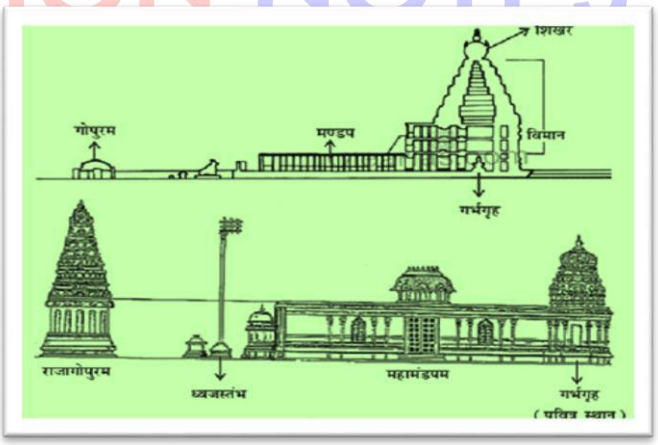

- दक्षिणी भारत की शैली।
- इस शैली में देव मूर्ति वाले गर्भ गृह के ऊपर ऊँचे विमान या पिरामिड बने होते हैं। जो अलंकृत होते हैं।
- इनमें बनाया गया गर्भगृह आयताकार होता है।
- मंदिर का मुख्य द्वार गोपुरम कहलाता है।
- द्रविड़ शैली का राजस्थान में सबसे प्राचीन मंदिर धौलपुर में स्थित चौपड़ा मंदिर है।

- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ हैं, निम्न हैं- रंग नाथ (पुष्कर, अजमेर), महादेव मन्दिर (झालावाड़)।

(4.) पंचायन शैली

- इसमें मुख्य मंदिर विष्णु को समर्पित होता हैं।
- इसके अलावा चार अन्य देव मंदिर सूर्य, शक्ति ,शिव व गणेश के होते हैं।
- ये मंदिर मुख्य मंदिर के चारों कोनों पर होते हैं तथा पाँचों का परिक्रमा पथ एक ही होता हैं।
- राजस्थान ने प्रमुख मंदिर जिनका निर्माण मुख्यतः इस शैली में हुआ हैं, निम्न हैं- ओसियां के हरिहर मंदिर (जोधपुर), बूढादीत सूर्य मंदिर (कोटा), भंवाल माता (नागौर), जगदीश मंदिर (उदयपुर)।

❖ राजस्थान के प्रमुख मंदिर

मौर्यकालीन मंदिर (300 ई.पू.)	नगरी (चित्तौड़गढ़) नांद (पुष्कर, अजमेर) बैराठ (जयपुर)
गुप्त कालीन मंदिर (300 से 700 ई.)	चार चौमा शिवालय (कोटा), कन्सुआ (कोटा)
गुर्जर प्रतिहार या महामारू शैली (700 ई. से 1000 ई.)	ओसिया के मंदिर (जोधपुर) जगत अम्बिका मंदिर (उदयपुर) , कुभ श्याम मंदिर (चितौड़), कालिका माता मंदिर (चितौड़गढ़) किराडू का सोमेश्वर मंदिर (बाड़मेर), दधिमति माता मंदिर (नागौर) हर्षद माता (आभानेरी,दौसा), हर्षनाथ मंदिर (सीकर), आउवा कामेश्वर मंदिर (पाली)
सोलंकी मंदिर (चालुक्य) / महागुर्जर शैली (11 वीं से 13 शताब्दी)	दिलवाड़ा के जैन मंदिर (सिरोही) समाद्धिश्वर मंदिर (मोकल मंदिर) सच्चिया माता मंदिर (ओसिया,जोधपुर)

❖ सोमेश्वर मंदिर किराडू (बाड़मेर)

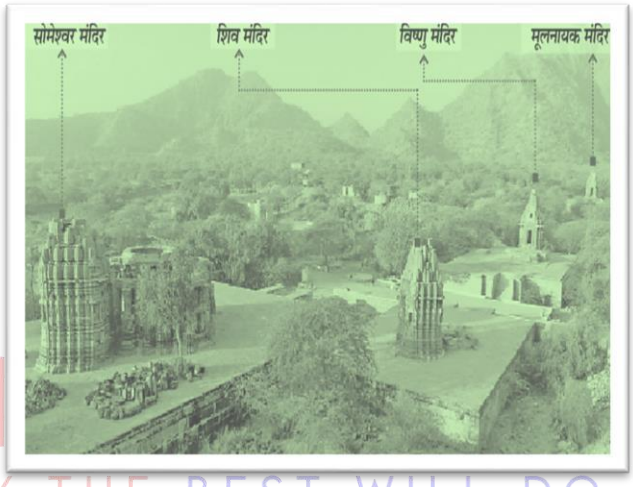

- यह मन्दिर हाथमा गाँव, किराडू (बाड़मेर) में स्थित हैं।
- किराडू का पुराना नाम किरात कूप हैं जो परमार राजाओं की राजधानी थी।
- इस मंदिर की मूर्तिकला को देखकर इसे 'मूर्तियों का खजाना' कहा जाता हैं।
- इन मन्दिरों में कुल पाँच मन्दिर हैं जिसमें चार भगवान शिव के तथा एक भगवान विष्णु का हैं।
- इन मन्दिरों का मूल निर्माण की शैली नागर या आर्य शैली हैं।
- किराडू के मंदिरों को राजस्थान का खजुराहों कहते हैं। 1178 ई. में मुहम्मद गौरी ने इस मंदिर पर आक्रमण किया था। इस मंदिर के सामने पहाड़ी पर महिषासुर मर्दिनी की एक त्रिपाद मूर्ति हैं।

❖ शीतलेश्वर महादेव का मंदिर (झालावाड़)

- यह झालरापाटन, झालावाड़ में स्थित है।
- यह मंदिर महामारू शैली में बना है।
- यह राजस्थान का प्रथम तिथियुक्त (689 ई.) मंदिर है।
- इसका निर्माण दुर्गाण के सामन्त वाप्पक ने करवाया।
- यह मन्दिर चन्द्रभागा नदी के किनारे स्थित है
- झालरापाटन 'घंटी वाले मंदिरों का शहर ' कहलाता है।
- इसे चन्द्रमौलिश्वर महादेव मन्दिर कहा है।
- यहाँ अर्द्धनारीश्वर की मूर्ति स्थापति है।

❖ **ब्रह्मा जी का मंदिर (पुष्कर, अजमेर)**

- यह पुष्कर, अजमेर में स्थित विश्व का प्रथम ब्रह्मा मन्दिर है।
- इस मन्दिर का निर्माण गोकलचंद पारीक ने करवाया था लेकिन कुछ किंवदंतियों के अनुसार इस मंदिर का प्रारम्भिक निर्माण शंकराचार्य ने करवाया था।
- इस मंदिर को राष्ट्रीय महत्व का स्मारक घोषित किया गया है।
- इस मन्दिर के परिसर में पंचमुखी महादेव, लक्ष्मीनारायण, गौरीशंकर, पातालेश्वर महादेव, नारद और नवग्रह के छोटे - छोटे मन्दिर बने हुए हैं।
- NOTE- राजस्थान में स्थित अन्य प्रमुख ब्रह्मा मंदिर छीछ गाँव (बाँसवाड़ा) में तथा आसोतरा बाड़मेर में स्थित है।

ब्रह्मा मन्दिर (छींछ,बाँसवाड़ा) - इस मन्दिर का निर्माण ने 12वीं सदी में जगमाल सिसोदिया करवाया। यहाँ नवग्रहों का मन्दिर तथा ब्रह्म घाट स्थित है।
ब्रह्मा मंदिर (आसोतरा,बाड़मेर) - इसका निर्माण संत खेतरामजी महाराज ने करवाया।

❖ **सावित्री मन्दिर (पुष्कर, अजमेर)**

- सावित्री मंदिर का निर्माण रत्नागिरि पर्वत पुष्कर, अजमेर में गोकुलचंद पारीक ने करवाया था।
- सावित्री जी का मेला भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को भरता है।
- यहाँ मई, 2016 में राजस्थान का तीसरा रोप वे बनाया गया था।
- कुछ जन अनुश्रुतियों के अनुसार यज्ञ के समय सावित्री माता अपने पति ब्रह्मा से रुठकर यहाँ चली आयी थीं। यहीं सावित्री माता ने ब्रह्माजी को श्राप दिया था कि उनकी पूजा पुष्कर के अतिरिक्त कहीं नहीं होगी।

❖ **एकलिंगनाथजी के मंदिर (कैलाशपुरी, उदयपुर)**

- इस मन्दिर का निर्माण 734 ई. में बप्पा रावल (कालभोज) ने करवाया।
- राणा मोकल ने इसका जीर्णोद्धार करवाया था।
- इस मन्दिर में एकलिंगजी की चतुर्मुखी काले पत्थर की मूर्ति है।

❖ **नीलकंठ महादेव मंदिर (टहला,राजगढ़)**

- इस मन्दिर का निर्माण 953 ई. में अजयपाल बड़गुर्जर ने करवाया।
- इस मंदिर में नृत्य करते गणेश जी (नाचना गणेश) की मूर्ति है।

❖ **भांडेश्वर जैन मंदिर(बीकानेर)**

- इस मन्दिर का निर्माण 1411 ई. में राव लूणकरण के समय ओसवाल महाजन भांडाशाह ने करवाया।
- कहा जाता है की इस मंदिर की नींव में पानी की जगह घी काम में लिया गया था।
- यह मन्दिर 5वें तीर्थंकर सुमितनाथ जी को समर्पित है।
- यह मंदिर तीन मंजिला है जिसकी प्रथम मंजिल पर भगवान सुमतिनाथ की मूर्ति, दूसरी मंजिल पर 24 तीर्थंकरों की तथा तीसरी मंजिल पर भांडाशाह की मूर्ति लगी है।
- इसे भण्डेश्वर - सण्डेश्वर मंदिर, व त्रिलोक दीपक प्रासाद मंदिर भी कहा जाता है।

❖ **हेरंब गणेश मंदिर (बीकानेर)**

- इस मंदिर का निर्माण बीकानेर शासक अनूपसिंह ने जूनागढ़ में करवाया था।
- सम्पूर्ण भारत में गणेशजी का एकमात्र मन्दिर जहाँ गणेशजी की मूर्ति चूहे पर सवार नहीं है बल्कि सिंह पर सवार है।
- जब औरंगजेब ने 1669 ई. में हिन्दू मंदिरों को तोड़ने का फरमान जारी किया उस समय अनुपसिंह ने मंदिरों से मूर्तियाँ एकत्रित कर सभी को जूनागढ़ में स्थापित करवाया।

❖ **केशवराय महादेव मन्दिर (केशोरायपाटन, बूँदी)**

- इस मन्दिर का निर्माण परशुराम जी ने करवाया जिसका पुनः निर्माण 18वीं शताब्दी में राव छत्रसाल ने करवाया।
- यह शिव मंन्दिर है।
- यह मन्दिर चम्बल नदी के किनारे स्थित है।

❖ **शृंगार चंवरी मंदिर (चित्तौड़गढ़)**

- यह राणा कुम्भा की पुत्री रमाबाई के विवाह का मंडप था।
- जिसे बाद में शांतिनाथ जैन मंदिर बना दिया गया।
- इसका निर्माण 1448 ई. में वेलका भंडारी ने करवाया।

❖ **तुलजा भवानी मंदिर (चित्तौड़गढ़)**

- तुलजा भवानी का मंदिर चित्तौड़गढ़ दुर्ग के रामपोल के पास बना है जिसका निर्माण पृथ्वीराज सिसोदिया के दासी पुत्र बनवीर ने करवाया था।
- तुलजा भवानी शिवाजी की कुल देवी है।

❖ **मचकुण्ड महादेव मन्दिर (धौलपुर)**

- यह मन्दिर धौलपुर में स्थित है।
- यहाँ पर स्थित जलकुण्ड में स्नान करने से चर्म रोग से मुक्ति मिलती है।
- मचकुण्ड को तीर्थों का भांजा कहते हैं।
- NOTE - तीर्थों का मामा पुष्कर (अजमेर) तथा तीर्थों की नानी शाकम्भरी माता (जयपुर) को कहते हैं।

❖ **गोविन्द देव जी का मन्दिर (जयपुर)**

- यह गौड़ीय सम्प्रदाय का मन्दिर है।
- सवाई जय सिंह ने वृन्दावन से मूर्ति लाकर इनका मन्दिर बनवाया।
- इन्हें जयपुर का वास्तविक शासक माना जाता है।
- इनकी पूजा विधि अष्टयाम सेवा के नाम से प्रसिद्ध है ।

❖ **कल्की मन्दिर (जयपुर)**

- उत्तर भगवान विष्णु के 10वें अवतार भगवान कल्की का यह मन्दिर विश्व का प्रथम मन्दिर है।
- इस मन्दिर का निर्माण सवाई जयसिंह ने 1739 ई. में करवाया।
- जयसिंह के दरबारी कवि कलानिधि देवर्षि श्री कृष्ण भट्ट ने भी 'ईश्वर विलास महाकाव्यम्' में कल्की अवतार का उल्लेख किया है।
- माना जाता है कि यहाँ स्थित घोड़े की मूर्ति के पैर में गड्ढा है जो धीरे- धीरे भर रहा है। जिस दिन यह गड्ढा पूर्ण रूप से भर जाएगा उस दिन कलयुग का अन्त हो जाएगा।

❖ **वीर हनुमान मंदिर (सामोद, जयपुर)**

- इस मंदिर में हनुमानजी की वृद्ध मूर्ति है जिनका एक पैर जमीन में धंसा है।

❖ **राणी सती (झुंझुनूँ)**

➢ यह राजस्थान का सती माता का सबसे बड़ा मन्दिर है जहाँ भाद्रपद अमावस्या को विशाल मेला भरता है।

❖ **लोहार्गल मंदिर (लोहार्गल , झुंझुनू)**

➢ यह मंदिर मालकेतू पर्वत पर बना है।

➢ भाद्रपद कृष्ण अष्टमी से अमावस्या तक यहाँ चौबीस कौस की परिक्रमा होती है।

❖ **चारभुजानाथ मन्दिर (मेड़ता सिटी, नागौर)**

➢ इस मन्दिर का निर्माण राव दूदा ने करवाया जो मीराबाई के दादा थे।

➢ इस मन्दिर की पूजा हरिदास जी के वंशज करते हैं इस मन्दिर में स्थित भगवान कृष्ण की पूजा मीरा बाई करती थीं।

➢ यहाँ मीरांबाई , संत तुलसीदास , रैदास की मूर्तियाँ हैं।

➢ श्रावणी एकादशी से पूर्णिमा तक मेला भरता है।

❖ **गुंसाई मंदिर (झुंझाला, नागौर)**

➢ पौराणिक कथा के अनुसार भगवान विष्णु ने जब वामन अवतार लेकर राजा बलि से तीन कदम जमीन मांगी थी तब वामन का तीसरा पैर जहाँ रखा गया, वहाँ गुसाई मंदिर है।

➢ ऐसी मान्यता है की रामदेवजी की यात्रा तभी पूरी मानी जाएगी जब भक्त रामदेवरा जाकर **झुंझाला** में गुंसाई जी के दर्शन करेगा।

❖ **चतुरदास जी का मंदिर (बुटाटी, नागौर)**

➢ चतुरदास जी एक प्रसिद्ध संत है। यहाँ लकवे का ईलाज होता है।

❖ **रानाबाई का मन्दिर (हरनावा, नागौर)**

➢ रानाबाई का जन्म हरनावा पट्टी में 1504ई. में चौधरी जालमसिंह धूण के घर में हुआ।

➢ रानाबाई को राजस्थान की दूसरी मीरा के रूप में जानी जाती है।

➢ वे संत चतुरदास जी की शिष्या थीं।

➢ किवदंती है कि रानाबाई के पिता को एक दिन गेछाला नाम के तालाब में भूतों ने घेर लिया और बेटी राना का विवाह बोहरा भूत के साथ कराने की जिद की। चिंताग्रस्त पिता ने हामी भर दी। भूत समुदाय राना के घर पहुँचा। रानाबाई ने ईश्वरीय शक्ति से भूत समुदाय का सर्वनाश किया। रानाबाई ने विवाह नहीं किया और 1570ई. को फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी को जीवित समाधी ली थी।

❖ **करमा बाई का मन्दिर (हरनावा, नागौर)**

➢ बोरावड़ के पास कालवा गांव में करमा बाई का जन्म 20 अगस्त, 1615 में जीवन राम डूडी के घर हुआ।

➢ बताया जाता है कि पिता करमा को भगवान की पूजा संभला पुष्कर स्नान को गए।

➢ मान्यता है कि करमा के सरल स्वभाव पर भगवान रीझ गए। भगवान खुद करमा का खीचड़ा खाने आते थे।

➢ अंतिम समय में करमा जगन्नाथपुरी में रहने लगी। करमा बाई 30 नवंबर, 1702 में भगवान के दर्शन के बाद सशरीर बैकुंठ को चली गई।

➢ कालवा में तो करमा और भगवान श्रीकृष्ण का मंदिर बना ही है, जगन्नाथपुरी मंदिर में भी करमा बाई की रोज पूजा होती है।

❖ **फूला बाई का मन्दिर (मांझवास, नागौर)**

➢ फूलाबाई का जन्म मांझवास गांव में चौधरी हेमाराम मांझू के घर 1568 ई. में हुआ।

➢ किवंदती है कि उन्होंने जोधपुर के तत्कालीन महाराजा जसवंतसिंह की पूरी फौज को काबूल से वापस आते समय चंद मिनटों में दो सोगरा, बाजरा की थूली व राबड़ी बनाकर भोजन कराया तथा एक फीट गहरा गड्ढा खोदकर फौज के घोड़ों को पानी पिलाया।

➢ फुला बाई के इसी चमत्कार से प्रभावित होकर जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह ने उन्हें अपनी धर्म बहन बनाया।

➢ फूलाबाई ने विवाह न कर रामभक्ति पर जोर दिया।

➢ तालाब की पाल पर राम की भक्ति करते हुए 1646 ई. (संवत 1703) में 78 वर्ष की आयु में जीवित समाधि ली।

➢ पद्मश्री हिम्मताराम भांभू प्रतिवर्ष महाधर्म सम्मेलन का आयोजन करवाते हैं। जहां लोग पर्यावरण वन एवं वन्य जीव सुरक्षा के साथ नशा छोड़ने का संकल्प लेते हैं।

❖ **फालना के जैन मन्दिर (पाली)**

➢ यह स्वर्ण जैन मन्दिर है। इसे गेट-वे-ऑफ गोल्डन या मिनी मुम्बई कहा जाता है।

अध्याय – 3

शास्त्रीय संगीत एवं शास्त्रीय नृत्य, लोक संगीत एवं वाद्य, लोक नृत्य एवं नाट्य

- संगीत से तात्पर्य गायन, वादन एवं नृत्य से है और यही तीन पक्ष इसके विकास के द्योतक हैं।
- संगीत कला को दो भागों में बांटा जाता है-

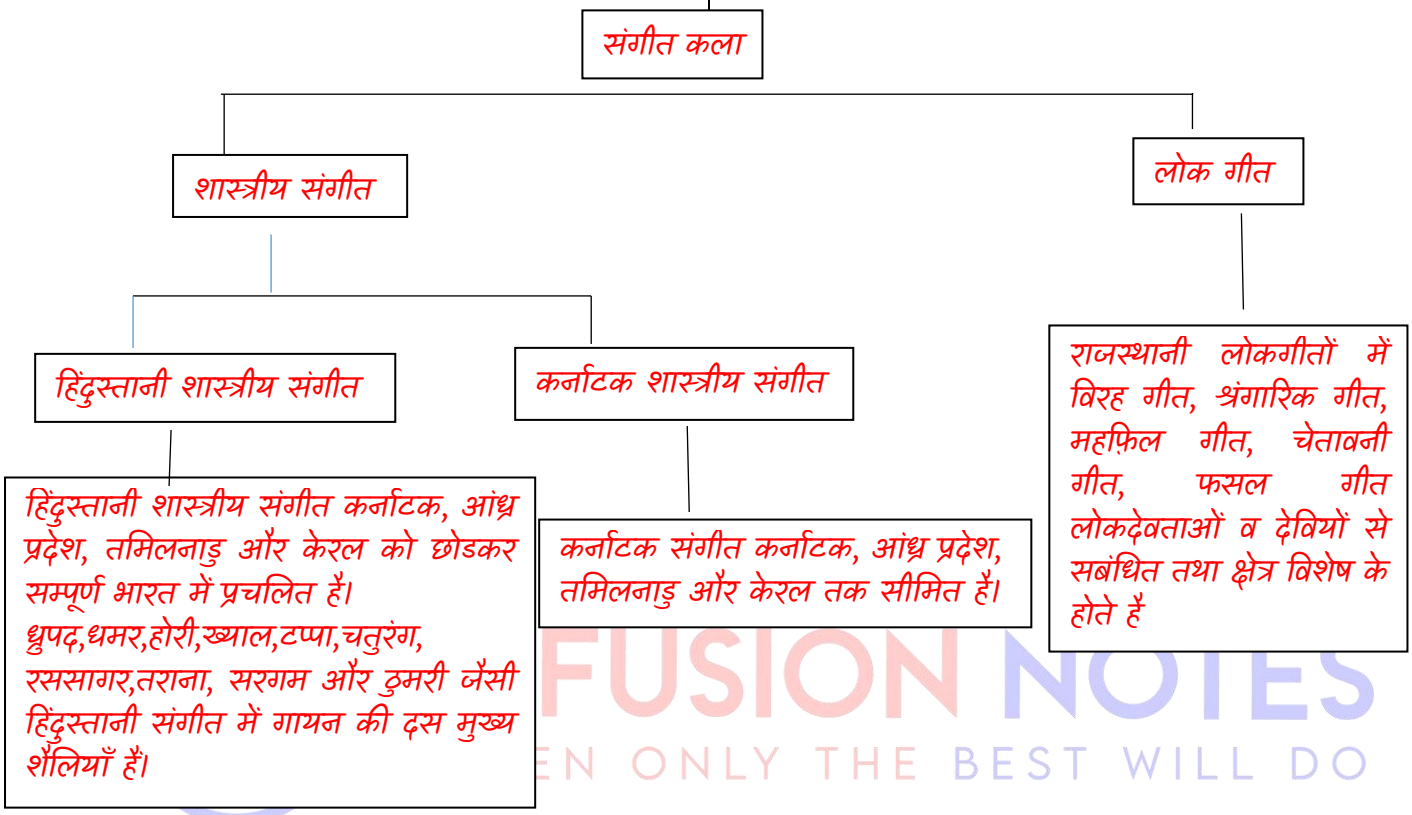

FUSION NOTES
EN ONLY THE BEST WILL DO

शास्त्रीय संगीत

- यह एक विशिष्ट गायन , वादन तथा नृत्य शैली का सूचक होता है जिसमें निश्चित नियमों का पालन किया जाता है ।
- इसमें भारतीय एवं ईरानी संगीत का समन्वय हुआ है ।
- भारतीय शास्त्रीय संगीत की परम्परा का संरक्षण विशिष्ट गुरु तथा शिष्य परम्परा के संयोग से बनता है , उस विशिष्ट गुरु शिष्य परम्परा को ' घराना ' कहा जाता है ।

- **राजस्थान में गायन, वादन व नृत्य के प्रमुख घराने**

राजस्थान में गायन के प्रमुख घराने

घराना	प्रवर्तक	विशेषताएँ
जयपुर घराना	मनरंग (भूपत खां)	ख्याल गायन शैली का घराना है। मुहम्मद अली खां कोठी वाले इस घराने के प्रसिद्ध संगीतज्ञ हुए हैं।
पटियाला घराना	फ़तेह अली व अली बख्श(टोंक के नवाब इब्राहीम के दरबारी)	यह जयपुर घराने की उपशाखा है। (प्रसिद्ध पाकिस्तानी गजल गायक गुलाम अली इसी घराने के सदस्य है)
मेवाती घराना	उस्ताद घग्घे नजीर खां	इन्होंने जयपुर की ख्याल गायकी को ही अपनी विशिष्ट शैली में

		विकसित कर यह घराना प्रारम्भ किया।
डागर घराना	बहराम खां डागर	महाराजा रामसिंह के दरबारी गायक
रंगीला घराना	रमजान खां 'मियाँ रंगीले	मियाँ रंगीले जोधपुर के गायक इमाम बख्श के शिष्य थे।

राजस्थान में वादन के प्रमुख घराने

घराना	प्रवर्तक	विशेषताएँ
बीनकार घराना(जयपुर	रज्जब अली बीनकार	रज्जब अली जयपुर के महाराजा रामसिंह के दरबार में प्रसिद्ध बीनकार थे।
सेनिया घराना(जयपुर)	तानसेन के पुत्र सूरत सेन	यह सितारवादियों का घराना है। इस घराने के गायक ध्रुपद की गौहर वाणी व खण्डारवाणी में सिद्धहस्त थे।

राजस्थान में नृत्य के प्रमुख घराने

घराना	प्रवर्तक	विशेषताएँ
जयपुर का कथक घराना	भानूजी	उत्तर भारत के प्रसिद्ध शासीय नृत्य कथक का उद्भव राजस्थान में 13वीं सदी में माना जाता है।

राजस्थान की प्रमुख स्थानीय गायन शैलियाँ

(i) माँड गायिकी

- माँड क्षेत्र (जैसलमेर) में गाई जाने वाली राग ' माँड ' राग कहलाई।
- राज्य की प्रसिद्ध माड गायिकाएँ - श्रीमती बन्नो बेगम (जयपुर) स्व . हाजन अल्लाह - जिलाह बाई (बीकानेर) , स्व . गवरी देवी (बीकानेर) , गवरी देवी (पाली) , माँगीबाई (उदयपुर) , श्रीमती जमीला बानो (जोधपुर) आदि ।

(ii) मांगणियार गायिकी

- माँगणियार मुस्लिम मूलतः सिंध प्रांत के है।
- राजस्थान की पश्चिमी मरूस्थलीय सीमावर्ती क्षेत्रों बाड़मेर, जैसलमेर, जोधपुर आदि में मांगणियार जाति के लोगों द्वारा अपने यजमानों के यहाँ मांगलिक अवसरों पर गायी जाती है।
- मांगणियार गायिकी में मुख्यतः 6 राग एवं 36 रागनियाँ होती है ।
- इनके प्रमुख वाद्य कमायचा , खड़ताल आदि है।
- प्रमुख मांगणियार कलाकार -साकर खाँ मांगणियार (कमायचा वादक) साफर खाँ (ढोलक वादक) , स्व . सद्दीक खाँ मांगणियार (प्रसिद्ध खड़ताल वादक) ।

(iii) लंगा गायिकी

- बीकानेर , बाड़मेर , जोधपुर एवं जैसलमेर जिले के पश्चिमी क्षेत्रों में मांगणियारों की तरह मांगलिक अवसरों एवं उत्सवों पर लंगा जाति के गायकों द्वारा गायी जाने वाली गायन शैली ' लंगा गायिकी ' कहलाती है ।
- सारंगी व कमायचा इनके प्रमुख वाद्य है।
- राजपूत इनके यजमान होते है।
- प्रमुख लंगा कलाकार- फूसे खाँ , महरदीन लंगा , अल्लादीन लंगा , करीम खाँ लंगा ।

(iv) तालबंदी गायिकी

- राजस्थान के पूर्वी अंचल - भरतपुर , धौलपुर , करौली एवं सवाई माधोपुर आदि में लोक गायन की शास्त्रीय परम्परा है , जिसमें राग - रागनियों से निबद्ध प्राचीन कवियों की पदावलियाँ सामूहिक रूप से गायी जाती है , इसे ही ' तालबंदी ' गायिकी कहते है ।
- इसमें प्रमुख वाद्य सारंगी , हारमोनियम , ढोलक , तबला व झाँझ है एवं बीच - बीच में नगाड़ा भी बजाते है ।

राजस्थान के प्रमुख संगीत ग्रंथ

❖ संगीत राज

- इसकी रचना मेवाड़ के महाराणा कुम्भा द्वारा 15 वीं सदी में की गई।
- ये पाँच कोषो पाठ्य, गीत, वाद्य, नृत्य और रस रत्नकोष आदि में विभक्त हैं। इसे 'उल्लास कहा गहैं।
- उल्लास को पुनः परीक्षण में बांटा गया हैं।
- इसमें ताल, राग, वाद्य, नृत्य, रस, स्वर आदि का विस्तार से वर्णन किया गया हैं।

❖ राग मंजरी

- इसकी रचना पुण्डरीक विठ्ठल ने की थी।
- ये जयपुर महाराजा मानसिंह के दरबारी थे।

❖ राग माला

- इस ग्रंथ की रचना भी पुण्डरीक विठ्ठल ने की थी।
- इसमें राग रागिनी व शुद्ध स्वर-सप्तक का उल्लेख किया गया हैं।

❖ शृंगार हार

- रणथम्भौर के शासक हम्मीर देव ने इस ग्रंथ की रचना की थी।

❖ राधागोविन्द संगीत सागर

- इसकी रचना जयपुर के महाराजा सवाई प्रतापसिंह के द्वारा करवाई गई ।
- इस ग्रंथ के लेखन में इनके राजकवि देवर्षि बृजपाल भट्ट का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं।
- इस ग्रंथ में बिलावल को शुद्ध स्वर सप्तक कहा गया हैं।

❖ राग-रत्नाकर

- जयपुर के उणीयारा ठिकाने के राव भीमसिंह के दरबार में रहकर राधा कृष्ण ने इस ग्रंथ की रचना की थी ।

❖ राग कल्पद्रुम

- इस ग्रंथ की रचना मेंवाड़ निवासी श्री कृष्णानन्द व्यास ने की थी।
- यह ग्रंथ संगीत के साथ-साथ हिंदी साहित्य के इतिहास के निर्माण के लिये भी उपयोगी माना जाता हैं।

राजस्थान के प्रमुख संगीतकार

❖ सवाई प्रताप सिंह

- जयपुर नरेश सवाई प्रताप सिंह संगीत एवं चित्रकला के प्रकांड विद्वान और आश्रयदाता थे।
- इन्होंने संगीत का विशाल सम्मेलन करवाकर संगीत के प्रसिद्ध ग्रंथ राधा गोविंद संगीत सार की रचना करवाई।
- इस ग्रंथ के लेखन में इनके राजकवि देवर्षि बृजपाल भट्ट का महत्वपूर्ण योगदान रहा।
- इनके दरबार में 22 प्रसिद्ध संगीतज्ञ एवं विद्वानों की मंडली को 'गंधर्व बाईसी' कहा जाता था।

❖ पंडित उदय शंकर

- उदयपुर में जन्मे श्री उदय शंकर प्रख्यात कथकली नर्तक थे।

❖ पंडित रविशंकर

- रविशंकर ने भारतीय शास्त्रीय संगीत की शिक्षा उस्ताद अल्लाऊद्दीन खाँ से प्राप्त की।
- अपने भाई उदय शंकर के नृत्य दल के साथ भारत और भारत से बाहर समय गुजारने वाले रविशंकर ने 1938 से 1944 तक सितार का अध्ययन किया और फिर स्वतंत्र तौर से काम करने लगे।
- उन्होंने भारतीय संगीत को विदेशों तक लोकप्रिय बनाया हैं इन्हें अमेरिका का प्रसिद्ध संगीत पुरस्कार ग्रैमी पुरस्कार मिल चुका हैं।

❖ पं.विश्वमोहन भट्ट

- इनका जन्म 12 जुलाई, 1950 ई. जयपुर में हुआ था।
- इनके गुरु पं. रविशंकर थे।
- विश्वमोहन ने गिटार , सरोद , बीणा का समन्वय कर ' मोहन वीणा ' नामक नये वाद्य यंत्र का आविष्कार किया तथा ' गौरीम्मा ' नामक नई राग का सृजन किया।
- पं . विश्वमोहन भट्ट को में इनके म्यूजिकल एलबम ' एमिटिंग बाई द रिवर ' के लिए 1993 में ग्रेमी पुरस्कार , वर्ष 1998 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार व वर्ष 2002 में पद्मश्री सम्मान वर्ष 2017 में पद्मभूषण सम्मान से सम्मानित किया गया।
- इनके बड़े भ्राता पंडित शशि मोहन भट्ट भी प्रसिद्ध सितार वादक थे जिनका वर्ष 2001 में जयपुर में निधन हो गया।

गवरी देवी

- यह बीकानेर की थी।
- यह जोधपुर राजघराने में एक मांड गायिका थी ।
- महाराजा उम्मेद सिंह के समय गवरी देवी को सर्वाधिक प्रसिद्धि मिली ।
- इन्हें राजस्थान की कोकिला कहते हैं।
- इन्हें ' माड मल्लिका ' भी कहते है।

> **NOTE** : - पाली की गवरी देवी भी प्रसिद्ध मांड गायकी है जो भैरवी युक्त मांड गायन में प्रसिद्ध है ।

❖ **बनो बेगम**

- बन्नो बेगम शास्त्रीय गायन , माण्ड गायन , ठुमरी , गीत व गजल में निपुण थी ।
- बन्नो बेगम की माता जौहरबाई भी जयपुर दरबार में गायिका थीं ।
- बन्नो बेगम जयपुर गुणीजन खाना में शामिल थीं इनके गुरु नजीन खां थे।

❖ **मांगीबाई**

- उनका जन्म प्रतापगढ़ में हुआ।
- मांगीबाई मांड व शास्त्रीय गायन में निपुण थी।

❖ **अल्लाह जिल्लाई बाई**

- इनका जन्म 1902 ई. बीकानेर में हुआ था ।
- महाराजा गंगासिंह ने इन्हें बचपन में ही गुणीजन खाना में प्रवेश करवा दिया।
- 2003 में अल्लाह जिल्लाई बाई पर 5 रूपये की डाक टिकट जारी हुई ।
- यह बीकानेर राजघराने में मांड गायिका थी ।
- अल्लाह जिल्लाई बाई को मरु कोकिला कहते हैं ।
- संगीत की शिक्षा उस्ताद हुसैन बक्स ने दी थी ।
- 1982 में उन्हें पद्म श्री का अवार्ड मिला ।
- केसरिया बालम , बाई सारा वीरा इनके प्रमुख गीत हैं।
- 3 नवम्बर, 1992 में बीकानेर में अल्लाह जिल्लाई बाई का निधन हुआ ।

❖ **अल्लादिया खां**

- इनका जन्म 1855 ई. में उणियारा (जयपुर) में हुआ था।
- अल्लादिया खाँ जयपुर संगीत घराने के प्रमुख संगीतकार थे ।
- एम . आर . जयकर ने अल्लादिया खाँ को माऊण्ट एवरेस्ट ऑफ म्यूजिक तथा संगीत सम्राट की उपाधि दी ।

❖ **जहीरुद्दीन फैयाज उद्दीन डागर**

- प्रसिद्ध ध्रुपद गायक जिन्होंने ट्रुपद में जुगलबंदी की परंपरा स्थापित की और ट्रुपद को नया रूप दिया ।

❖ **अमीर खुसरो**

- इसका जन्म उत्तर प्रदेश में 1253 ईस्वी में हुआ था।
- खुसरो अलाउद्दीन खिलजी के दरबारी संगीतज्ञ थे।
- वह सूफ़ी रहस्यवादी थे और दिल्ली वाले निजामुद्दीन औलिया उन के आध्यात्मिक गुरू थे उनकी मुख्य काव्य रचनायें तुहफा-तुस-सिग़र, वसतुल-हयात, गुर्रातुल-कमाल, नेहायतुल-कमाल आदि हैं।

❖ **राजा मानसिंह तोमर**

- ग्वालियर के शासक जो एक अच्छे विद्वान और संगीतज्ञ थे।
- उन्होंने बैजू बावरा के सहयोग से ध्रुपद गायन को परिष्कृत रूप प्रदान कर उसका सुधार किया।

❖ **तानसेन**

- मुगल बादशाह अकबर के नवरत्नों में एक तानसेन भारत के अब तक के सबसे विद्वान संगीतज्ञ हुए हैं यह ध्रुपद की गौहरवाणी के सर्वाधिक ज्ञाता थे।

❖ **बैजू बावरा**

❖ वे ग्वालियर के राजा मानसिंह के दरबार के गायक थे और अकबर के दरबार के महान गायक तानसेन के समकालीन थे।

❖ **विष्णु दिगंबर**

- इनका जन्म 1872 ई. को महाराष्ट्र में हुआ था।
- विष्णु दिगंबर ने 1930 ई में रघुपति राघव राजा राम (गाँधीजी का प्रिय भजन) का गायन किया।

❖ **विष्णु नारायण भातखंडे**

तेजा

- यह तेजाजी की भक्ति में खेत की बुवाई/जुताई करते समय गाया जाता है

मोरिया थाई रे थाई

- इस गरासिया गीत में दूल्हे की प्रशंसा की जाती है और महिलाएं इसके इर्द गिर्द नृत्य करती है ।

मरसिया

- मारवाड़ क्षेत्र में किसी प्रसिद्ध व्यक्ति की मृत्यु के अवसर पर गाया जाने वाला गीत ।

मोरिया

- इसमें ऐसी बालिका की व्यथा है, जिसका संबंध तो तय हो चुका है, लेकिन विवाह में देरी है यह एक विरह गीत है । मोरिया का अर्थ मोर होता है ।

माहेरा

- बहिन के लड़के या लड़की की शादी के समय भाई उसको चुनड़ी ओंढाता है और भात भरता है । अतः इस प्रसंग से संबधित गीत भात/माहेरा के गीत कहलाते है ।

मूमल

- जैसलमेर में गाया जाने वाला श्रृंगारित एवं प्रेम गीत है । मूमल लोद्रवा (जैसलमेर) की राजकुमारी थी ।

लाखा फुलाणी के 'गीत-

- ये गीत मध्यकाल से प्रारंभ माने जाते हैं, और इनकी उत्पत्ति सिंध प्रदेश से हुई थी।

लांगुरिया

- करौली क्षेत्र की कुल देवी'**केला देवी**'की आराधना में गाए जाने वाले ये भक्ति गीत है ।

लसकरिया

- लसकरिया गीत कच्छी घोडी नृत्य करते समय गाया जाता है ।

बीन्द

- बीन्द गीत कच्छी घोडी नृत्य करते समय गाया जाता है

रसाला

- रसाला गीत कच्छी घोड़ी नृत्य करते समय गाया जाता है ।

रमगारिया

- रमगारिया गीत कच्छी घोड़ी नृत्य करते समय गाया जाता है ।

लावणी

- लावणी का अर्थ **बुलाने से** है । नायक के द्वारा नायिका को बुलाने के लिए यह गीत गाया जाता है । मोरध्वज, ऊसंमन, भरथरी आदि प्रमुख लावणियां है ।

लूर

- यह राजपूत स्त्रियों द्वारा गाया जाने वाला गीत है ।
- यह गीत गणगौर के साथ-साथ मांगलिक अवसरों पर मारवाड़ क्षेत्र में सर्वाधिक गाया जाता है।
- इस गीत का प्रचलन बूंदी व कोटा क्षेत्र में गणगौर के अवसर पर भी होता है।

लोरी

- ये गीत माँ द्वारा अपने बच्चे को सुलाने के लिए गाती है ।

गोरबंद

- यह गणगौर पर स्त्रियों द्वारा गाया जाने वाला गीत है।
- गोरबंद ऊँट के गले का आभूषण होता है।
- राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों विशेषतः मरुस्थली व शेखावाटी क्षेत्रों में लोकप्रिय 'गोरबन्द' गीत प्रचलित है ।

गोपीचन्द

- इसमें बंगाल के शासक गोपीचन्द द्वारा अपनी रानियों के साथ किया संवाद चर्चित है ।

गणगौर

- गणगौर के अवसर पर गाया जाने वाला गीत । राज्य में सर्वाधिक गीत इसी अवसर पर गाये जाते है।

गढ़

- ये गीत सामन्तो राज दरबारों और अन्य समृद्ध लोगों द्वारा आयोजित महफिलों में गाए जाते हैं।
- ये रजवाड़ी व पेशेवर गीत हैं। ढोली दमापी मुसलमान तवायफें इन गीतों को गाते हैं।

बन्ना-बन्नी

- विवाह के अवसर पर वर-वधू के लिए ये गीत गाये जाते हैं।

बीणजारा

- यह एक प्रश्नोत्तर परक गीत है। इस गीत में पत्नी पति को व्यापार हेतु प्रदेश जाने की प्रेरणा देती है।

विनायक

- विनायक मांगलिक कार्यो के देवता हैं, किसी भी शुभ कार्य को करने से पहले विनायक **(गणेशजी की पूजा)** पूजा कर गीत गाये जाते हैं।

बंधावा

- यह शुभ कार्य के संपन्न होने पर गाया जाने वाला लोकगीत है।

बादली गीत

- बादली गीत शेखावाटी, में वाड़ व हाड़ौती क्षेत्र में गाया जाने वाला वर्षा ऋतु से संबंधित गीत है।

बीरा गीत

- बीरा नामक लोकगीत ढूंढाड़ अंचल में भात सम्पन्न होने के समय गाया जाता है।

बेमाता गीत

- नवजात शिशु का भाग्य लिखने वाली बेमाता के लिए यह गीत गाया जाता है।

भणेत

- राजस्थान में श्रम करते समय परिश्रम से होने वाली थकान को दूर करने के लिए इस गीत को गाया जाता है।

पडवलियों

- बालक के जन्म होने के पश्चात बालमनुहार के लिए गाये जाने वाला गीत है।
- पडवलियों का अर्थ घास से बनाया हुआ छोटा मकान होता है।

पणिहारी

- पनघट से पानी भरने वाली स्त्री को पणिहारी कहते हैं। इस गीत में राजस्थानी स्त्री का पतिव्रत धर्म पर अटल रहना बताया गया है।

परणेत

- इस गीत का सम्बन्ध विवाह से है। राजस्थान में विवाह के गीत सबसे अधिक प्रचलित है। परणेत के गीतों में बिदाई के गीत बहुत ही मर्म स्पर्शी होते हैं।

पावणा

- यह गीत दामाद के ससुराल आगमन पर गाया जाता है।

पपैया

- इसमें एक युवती किसी विवाहित युवक को भ्रष्ट करना चाहती है, किन्तु इस आदर्श गीत में पुरुष अन्य स्त्री से मिलने के लिए मना करता है। पपैया एक प्रसिद्ध पक्षी है।

पंछीड़ा

- यह गीत हाड़ौती व ढूंढाड़ क्षेत्र में मेलों के अवसरों पर अलगोजे, ढोलक व मंजीरे के साथ गाया जाता है।

पवाड़ा

- किसी महापुरुष, वीर के विशेष कार्यों को वर्णित करने वाली रचनाएं पवाड़ा कहलाती हैं।

पटैल्या, बिछिया, लालर

- यह पर्वतीय क्षेत्रों में आदिवासियों के द्वारा गाया जाने वाला गीत है।

पीपली

- यह गीत रेगिस्तानी क्षेत्र विशेषत: शेखावाटी, बीकानेर, मारवाड़ के कुछ भागों में स्त्रियों द्वारा वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला लोकगीत है।
- इसमें प्रेयसी अपने परदेश गये पति को बुलाती है।

अध्याय – 2

अर्थव्यवस्था का वृहत् परिदृश्य

प्रचलित कीमतों पर **सकल राज्य घरेलू उत्पाद** (जीएसडीपी) **वर्ष 2021-22** के लिए **₹11.96 लाख करोड़** होने का अनुमान है, जबकि **वर्ष 2020-21** के दौरान यह **₹10.13 लाख करोड़** था, जो कि **पिछले वर्ष** की तुलना में **18.04 प्रतिशत** की वृद्धि दर्शाता है। वर्ष 2021-22 में स्थिर (2011-12) कीमतों पर **सकल राज्य घरेलू उत्पाद** अनुमान **₹7.33 लाख करोड़** अनुमानित किया गया है जो कि वर्ष **2020-21 के ₹6.60 लाख करोड़** से **11.04 प्रतिशत की वृद्धि** दर्शाता है।

प्रचलित कीमतों पर शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद (एनएसडीपी) वर्ष **2021-22** के लिए **₹10.79 लाख करोड़** होने का अनुमान है, जबकि **वर्ष 2020-21** के दौरान यह **₹9.14 लाख करोड़** था, जो कि **पिछले वर्ष** की तुलना में **18.01 प्रतिशत** की वृद्धि दर्शाता है। वर्ष **2021-22** में स्थिर (2011-12) कीमतों पर **शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद** अनुमान **₹6.48 लाख करोड़** अनुमानित किया गया है, जो कि **वर्ष 2020-21 के ₹5.84 लाख करोड़ से 11.05 प्रतिशत की वृद्धि** दर्शाता है।

प्रचलित कीमतों पर **प्रति व्यक्ति आय** वर्ष **2021-22** में **₹1,35,218** अनुमानित की गई है, जो कि गत वर्ष **2020-21** की **₹1,15,933** से 16.63 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाती है। **स्थिर (2011-12) कीमतों** पर **प्रति व्यक्ति आय** वर्ष **2021-22** में **₹81,231** अनुमानित की गई है, जो कि गत वर्ष **2020-21** की **₹74,009 से 9.76** प्रतिशत की **वृद्धि को दर्शाती** है।

आर्थिक विकास के मुख्य सूचक

क्र.सं.	विवरण	इकाई	2017-18	2018-19	2019-20	2020-21	2021-22
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	सकल राज्य घरेलू उत्पाद (अ) स्थिर (2011-12) मूल्यों पर प्रचलित मूल्यों पर	रु. करोड़	628020 832529	642929 911674	679564 999050	660118 1013323	733017 1196137
2.	सकल राज्य घरेलू उत्पाद वृद्धि दर (अ) स्थिर (2011-12) मूल्यों पर (ब) प्रचलित मूल्यों पर	प्रतिशत	5.24 9.46	2.37 9.51	5.70 9.58	-2.86 1.43	11.04 18.04
3.	सकल राज्य मूल्य वर्धन स्थिर (2011-12) बुनियादी मूल्यों का क्षेत्रवार योगदान (अ) कृषि (ब) उद्योग	प्रतिशत	 25.20 32.52	 26.14 27.65	 28.05 26.09	 30.45 25.26	 28.85 26.34

	(स) सेवाएँ		42.28	46.21	45.86	44.29	44.81
4.	सकल राज्य मूल्य वर्धन प्रचलित बुनियादी मूल्यों का क्षेत्रवार योगदान (अ) कृषि (ब) उद्योग (स) सेवाएँ	प्रतिशत	 26.14 29.23 44.63	 25.88 26.26 47.86	 27.83 24.54 47.63	 30.98 23.42 45.60	 30.23 24.67 45.10
5.	शुद्ध राज्य घरेलू उत्पाद (अ) स्थिर (2011-12) मूल्यों पर (ब) प्रचलित मूल्यों पर	रु.करोड़	 557618 748490	 568102 819340	 598550 898081	 583645 914262	 648142 1078903
6.	प्रति व्यक्ति आय (अ) स्थिर (2011-12) मूल्यों पर (ब) प्रचलित मूल्यों पर	रु.	 73529 98698	 73929 106624	 76882 115356	 74009 115933	 81231 135218
7.	सकल स्थाई पूंजी निर्माण प्रचलित मूल्यों पर	रु.करोड़	236069	265091	283423	276473	-
8.	कृषि उत्पादन सूचकांक * (आधार वर्ष 2005- 06 से 2007-08 =100)		170.17	183.07	202.56	204.97	
9.	कुल खाद्यान्न उत्पादन *	लाख मैं. टन	221.05	231.60	266.35	269.09+	225.20-
10.	औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आधार वर्ष 2011-12 = 100)		133.08	140.37	126.90	122.34@	131.33@@
11.	थोक मूल्य सूचकांक (आधार वर्ष 1999-2000 = 100) प्रतिशत परिवर्तन		292.34 1.78	301.74 3.22	316.00 4.73	337.70 6.87	369.01$ 9.27
12.	अधिष्ठापित क्षमता (ऊर्जा)	मेगावाट	19553	21078	21176	21979	23321$
13.	वाणिज्यिक बैंक साख (सितम्बर)	रु.करोड़	219643	267523	315149	343406	375030

कृषि वर्ष से सम्बन्धित है !

+ अन्तिम

- अग्रिम प्रावधानिक	प्रावधानिक दिसम्बर, 2021 तक दिसम्बर. 2021 तक

भारतीय अर्थव्यवस्था में राजस्थान का योगदान (2021-22)	
अर्थव्यवस्था का आकार	
	प्रचलित मूल्यों पर अखिल भारत : रु.232.15 लाख करोड़ राजस्थान : रु.11.96 लाख करोड़
	भारत की जी.डी.पी.में राज्य का प्रतिशत योगदान प्रचलित मूल्यों पर राजस्थान : 5.15
	जीडीपी / जीएसडीपी विकास दर (%) स्थिर (2011-12) मूल्यों पर भारत : 9.2 राजस्थान : 11.04
	प्रति व्यक्ति आय प्रचलित मूल्यों पर भारत : रु. 1,50,326 राजस्थान : रु.1,35,218
सामाजिक संकेतक	
	साक्षरता दर (%) (2011 की जनगणना के अनुसार) भारत : 73.0 राजस्थान : 66.1
	जन्म दर – 2019 (प्रति 1000 जनसंख्या पर) भारत : 19.7 / राजस्थान : 23.7

	कार्य भागीदारी दर (%) (2011 की जनगणना के अनुसार) भारत : 39.8 राजस्थान : 43.6
जनसांख्यिकीय प्रोफाइल	
	भौगोलिक क्षेत्र (लाख वर्ग कि.मी.) (2011 की जनगणना के अनुसार) भारत : 32.87 राजस्थान : 3.42
	जनसंख्या (2011 की जनगणना के अनुसार) भारत : 121.09 करोड़ राजस्थान : 6.85 करोड़
	लिंगानुपात (जनगणना 2011) (महिलाएं प्रति 1000 पुरुष) भारत : 943 / राजस्थान : 928
राजस्थान में भौतिक आधारभूत संरचना	
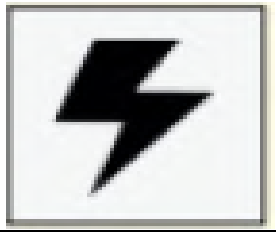	**स्थापित विद्युत क्षमता** (मेगावाट) भारत : 3,93,389 राजस्थान : 23,321
	सड़क घनत्व (प्रति 100 वर्ग कि.मी.) भारत : 161.71 कि.मी. राजस्थान : 79.76 कि.मी.

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

डाक और दूरसंचार (मार्च, 2021)

डाक घर –

भारत : 1,56,721

राजस्थान : 10,287

दूरसंचार ग्राहक (करोड़)

भारत : 120.12

राजस्थान : 6.68

थोक एवं उपभोक्ता मूल्य सूचकांक

राज्य का **सामान्य थोक मूल्य सूचकांक** (आधार वर्ष 1999-2000=100) वर्ष **2020** के **330.86** से **बढ़कर** वर्ष 2021 में **363.23** हो गया है, जो कि गत वर्ष से **9.78 प्रतिशत** की वृद्धि को दर्शाता है। गत वर्ष से प्राथमिक वस्तु ईंधन, शक्ति, प्रकाश एवं उपस्नेहक एवं विनिर्मित उत्पाद समूह के सूचकांक में क्रमशः **14.10, 11.91 तथा 4.91 प्रतिशत की वृद्धि** हुई है। जबकि अखिल भारतीय स्तर पर सामान्य थोक मूल्य सूचकांक (आधार वर्ष 2011-12-100) पिछले वर्ष की तुलना में वर्ष **2021 में 10.67 प्रतिशत** की **वृद्धि** हुई है। वर्तमान में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक माह सितम्बर, 2020 से आधार वर्ष 2016=100 पर जारी किये जा रहे हैं, जिसमें राज्य में अजमेर केन्द्र के स्थान पर अलवर केन्द्र को शामिल किया गया है। औद्योगिक श्रमिकों के उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (आधार वर्ष 2016 -100) में दिसम्बर, 2021 में बढ़ती प्रवृत्ति देखी गई है, जिसमें दिसम्बर, 2020 की तुलना में अलवर केंद्र में 5.0 प्रतिशत, भीलवाड़ा केंद्र में 3.9 प्रतिशत और जयपुर केंद्र में 2.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है।

बैंकिंग एवं वित्त'

राज्य में बैंकिंग एवं वित्तीय प्रणाली का व्यापक नेटवर्क विद्यमान है। राज्य में सितंबर, **2021 में कुल 7,791 बैंक कार्यालय / शाखाएँ हैं, जिनमें से 4,219 सार्वजनिक क्षेत्र, 1,575 क्षेत्रीय ग्रामीण, 1,560 निजी क्षेत्र, 9 विदेशी, 393 लघु वित्त और 35 भुगतान बैंक शाखाएं / कार्यालय हैं।**

राजस्थान में सितम्बर, 2021 में **जमाओं में** सितम्बर, 2020 की तुलना में **9.03 प्रतिशत** की **वृद्धि** हुई है, जबकि इसी अवधि में **अखिल भारतीय स्तर** पर यह **वृद्धि 10.08 प्रतिशत** रही है। सितम्बर, 2021 में राजस्थान में समस्त सूचीबद्ध वा**णिज्यिक बैंकों** का साख-जमा **अनुपात 75.53 प्रतिशत** रहा है एवं अखिल भारतीय स्तर पर यह अनुपात 70.01 प्रतिशत रहा है, जबकि सितम्बर, 2020 तक राजस्थान में यह अनुपात 75.41 प्रतिशत तथा अखिल भारतीय स्तर पर 72.04 प्रतिशत रहा था।

राजस्थान की प्रमुख विशेषताओं का अखिल भारत से तुलनात्मक विवरण

सूचक	वर्ष	इकाई	राजस्थान	भारत
भौगोलिक क्षेत्रफल	2011	लाख वर्ग किमी.	3.42	32.87
जनसंख्या	2011	करोड़	6.85	121.09
दशकीय वृद्धि दर	2001-2011	प्रतिशत	21.3	17.7
जनसंख्या घनत्व	2011	जनसंख्या प्रति वर्ग किमी.	200	382

(i) कोविड-19 एवम सुधार हेतु अतिरिक्त ऋण	0	0	0	0	-21301
(ii) जी.एस.टी.क्षतिपूर्ति अनुदान के स्थान पर अतिरिक्त ऋण	0	0	0	0	-4604
(iii) पूंजीगत व्यय हेतु अतिरिक्त ऋण	0	0	0	0	-1002
16.(अ) राजकोषीय देनदारियां (ऋण एवम अन्य दायित्व)(कोविड-19 रहित)	255002	281182	311374	352702	383592
सकल राज्य घरेलू उत्पाद से प्रतिशत (कोविड-19 रहित)	33.53	33.77	34.15	35.30	37.85

- **73वें और 74वें संविधान में पंचायती राज में योगदान**
- पंचायती राज संस्थाओं ने 27 वर्षों की अपनी यात्रा में उल्लेखनीय सफलता भी पाई है और भारी विफलता भी झेली है जिनका मूल्यांकन उनके द्वारा तय किये गए लक्ष्यों के आधार पर किया जाता है।
- जहाँ पंचायती राज संस्थाएँ **जमीनी स्तर पर सरकार तथा राजनीतिक प्रतिनिधित्व** के एक और स्तर के निर्माण में सफल रही हैं वहीं **बेहतर प्रशासन** प्रदान करने के मामले में वे विफल रही हैं।
- देश में लगभग 250,000 पंचायती राज संस्थाएँ एवं शहरी स्थानीय निकाय और तीन मिलियन से अधिक निर्वाचित स्थानीय स्वशासन प्रतिनिधि मौजूद हैं।
- 73वें और 74वें संविधान संशोधन द्वारा यह अनिवार्य किया गया है कि स्थानीय निकायों के कुल सीटों में से कम-से-कम एक तिहाई तिहाई सीटें महिलाओं के लिये आरक्षित हों। भारत में निर्वाचित पदों पर आसीन महिलाओं की संख्या विश्व में सर्वाधिक है (1.4 मिलियन)। अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवारों के लिये भी स्थानों और सरपंच/प्रधान के पदों का आरक्षण किया गया है।
- पंचायती राज संस्थाओं पर विचार करते हुए किये गए अध्ययन से पता चला है कि **स्थानीय सरकारों में महिला राजनीतिक प्रतिनिधित्व से** महिलाओं के आगे आने और अपराधों की रिपोर्ट दर्ज कराने की संभावनाओं में वृद्धि हुई है।
  - महिला सरपंचों वाले ज़िलों में विशेष रूप से पेयजल, सार्वजनिक सुविधाओं आदि में वृहत निवेश किया गया है।
- इसके अलावा, राज्यों ने **विभिन्न शक्ति हस्तांतरण प्रावधानों को वैधानिक सुरक्षा** प्रदान की है जिन्होंने स्थानीय सरकारों को व्यापक रूप से सशक्त बनाया है।
- उत्तरोत्तर केंद्रीय वित्त आयोगों ने **स्थानीय निकायों के लिये धन आवंटन में उल्लेखनीय वृद्धि की** है इसके अलावा प्रदत्त अनुदानों में भी वृद्धि की गई है।
- 15वाँ वित्त आयोग स्थानीय सरकारों के लिये आवंटन में और अधिक वृद्धि पर विचार कर रहा है ताकि इन्हें किये जाने वाले आवंटन को अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप बनाया जा सके।
- **24 अप्रैल, 2022 को 12वां राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस** मनाया गया।
- लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण में पंचायती राज संस्थाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है
- स्वतंत्र भारत में पंचायती राज प्रणाली अक्तूबर, 1952 में शुरू हुई, लेकिन जमीनी स्तर पर वंचित वर्ग और पेक्षित समुदायों की सहभागिता न होने के कारण सफल नहीं हो पाई। इस प्रणाली की पुनः शुरुआत 1959 में बलवन्तराय मेहता समिति की रिपोर्ट के आधार पर हुई।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न

1. समेकित बंजरभूमि विकास कार्यक्रम की शुरुआत में केन्द्र सरकार द्वारा की गई थी।
   a. 1999-2000 b. 1989-90
   c. 1979-80 d. 1969-70
   Ans. (b)

2. मरू विकास कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया था।
   a. 1977-78 ई. b. 1987-88 ई.
   c. 1997-98 ई. d. 1967-68ई.
   Ans. (a)

3. सीमावर्ती क्षेत्रीय विकास कार्यक्रम (BADP) शुभारंभ किया गया था।
   a. सन् 1968-1967 b. सन् 1976-1977
   c. सन् 1956-1957 d. सन् 1986-1987

   Ans. (d)

4. जलग्रहण विकास कार्यक्रम शुभारंभ किया गया था।
   a. 1996 में शुरू b. 1995 में शुरू
   c. 1997में शुरू d. 1998 में शुरू
   Ans. (b)

5. मरुगोचर योजना शुभारंभ किया गया था।
   a. 2004-05 b. 2002-03
   c. 2003-04 d. 2006-07
   Ans. (c)

6. केन्द्रीय मरु क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (काजरी) स्थापना किया गया था।
   a. 1959 में b. 1969 में
   c. 1979 में d. 1989 में
   Ans d

7. प्रियदर्शनी आदर्श स्वयं सहायता समूह योजना लागू की गई थी
   a. वर्ष 2008-09 में b. वर्ष 2009-10 में
   c. वर्ष 2010-11 में d. वर्ष 2007-08में
   Ans. (b)

8. सुपोषित मां अभियान **योजना** लागु की गई थी
   a. 19 फरवरी 2020 b. 29 फरवरी 2021
   c. 09 फरवरी 2020 d. 29 फरवरी 2020
   Ans. (d)

9. ट्राइसेम को शुरू किया गया।
   a. 15 अगस्त 1989 b. 15 अगस्त 1979
   c. 16 अगस्त 1979 d. 16 अगस्त 1989
   And. (b)

10. समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम योजना लागु की गई थी
    a. 2 अक्टूबर 1980 b. 9 अक्टूबर 1980
    c. 12 अक्टूबर 1980 d. 2 अक्टूबर 1981
    Ans. (a)

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

VDO Pre. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्न
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	30 नवम्बर	66 (100 में से)
SSC GD 2021	01 दिसम्बर	65 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)

FREE SAMPLE

RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp – https://wa.link/gwli3t

Online order – https://bit.ly/rsmssb-cet-notes